₹ 15

हिन्दी अध्यापकों की मासिक पत्रिका

# क्रान्ति

मई 2011

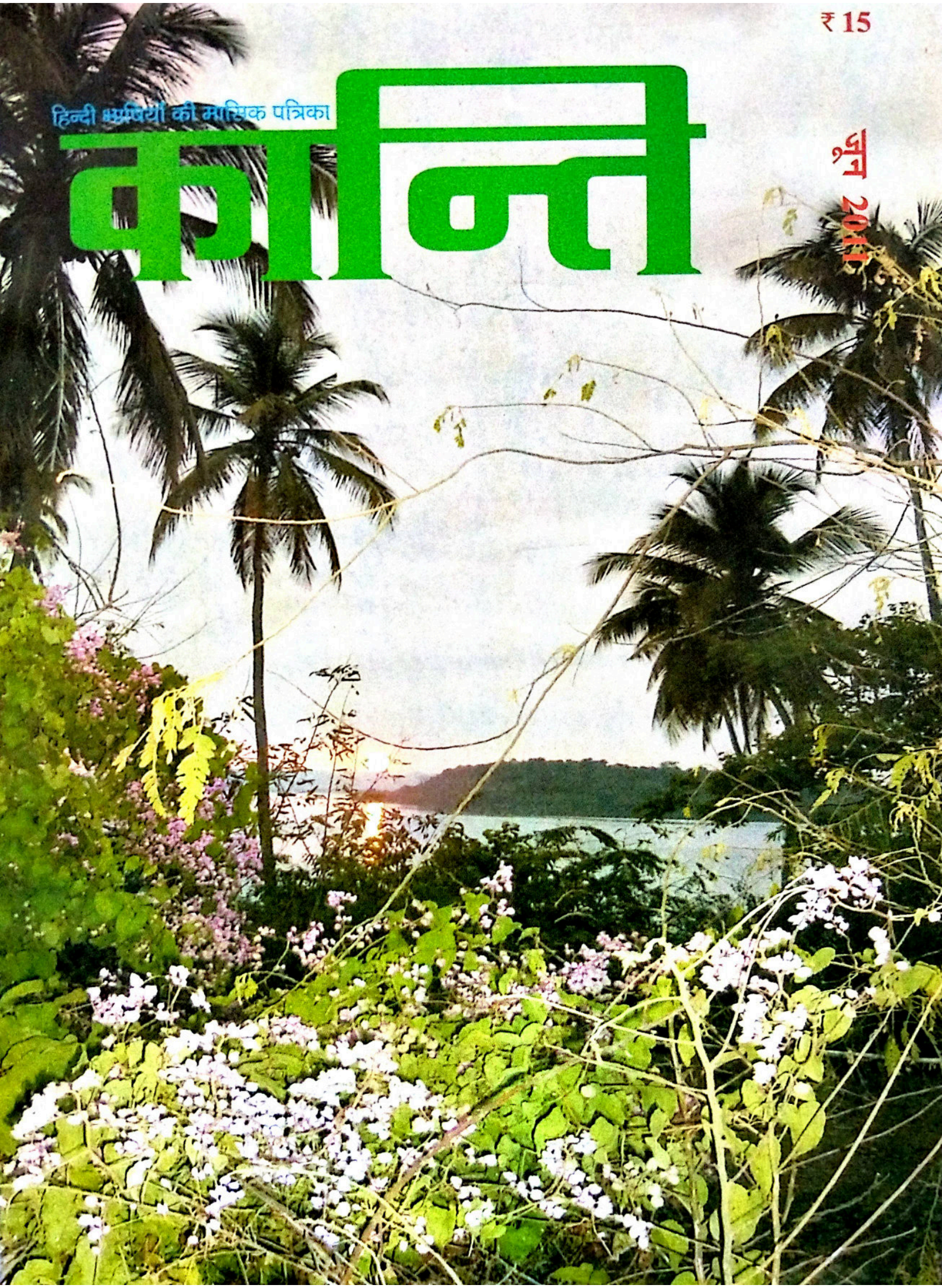

# ADMISSIONS OPEN

# SHIFAA SCHOOL OF NURSING

No. 332, Darus-Salam Building, Queen's Road, Bangalore-560032
Recognised by KNC/INC

## GNM Course

(Diploma in General Nursing & Midwifery)

- *3½ years course*
- *Only for Girls*
- *Age Limit–18 to 35 years*
- *Reasonable Fees*
- *Minimum Qualification–II PUC (+2)*
- *(Science/Arsts/Commerce)*
- *Patent Hospital–200 Bedded*
- *Spiritual & Safe environment*
- *Near Cantonement Railway Station*

*Scholarship for Merritorious Students*

**For Applications & other Details :**

**Contact : Co-ordinator, Ms. Zubaida**
**Mob. No. : 9535059804**

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 20 अंक 12 जून 2011

अल्लाह ही की ओर के होकर रहो। उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, क्योंकि जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराता है तो मानो वह आकाश से गिर पड़ा। फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएं या वायु उसे किसी दूरवर्ती स्थान पर फेंक दे। –क़ुरआन

संपादक

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

# ग़ज़ल

राह रोकेंगे दश्तो-दरिया[1] क्या
अज़्म[2] के सामने हिमाला[3] क्या

उसकी तौफ़ीक़[4] ही से है सब कुछ
वरना मैं क्या मेरा इरादा क्या

बूंद भर में निहाल हो जाऊं
वो नवाज़ें तो कम-ज़ियादा क्या

आदमी को कहीं क़रार नहीं
बढ़ गई हद से हुब्बे-दुनिया[5] क्या

हर बुने-मू[6] बना है शुक्रो-सिपास[7]
इससे बढ़कर कोई वज़ीफ़ा[8] क्या

जब ये तय है कि बे-मिसाल है वो
फिर ये तश्बीहो-इस्तिआ़रा[9] क्या

कुन[10] कहा और बन गई दुनिया
इस कहानी की रूप-रेखा क्या

मेरे पीछे पड़ी है क्यों दुनिया
मुझको दुनिया से लेना-देना क्या

सब मेरी दास्तां के टुकड़े हैं
लूट क्या, ख़ून क्या, ख़राबा क्या

आज दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं
मंज़रे-क़त्ल[11] क्या, तमाशा क्या

अक़्ल हैरान है परेशां है
हो गया ज़िन्दगी का नक़्शा क्या

हम ख़याली[12] नहीं तो कुछ भी नहीं
हम निवाला-ओ-हम पियाला क्या

ये नया आलमी-निज़ाम[13] 'हफ़ीज़'
क्या समझते थे और निकला क्या।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. रेगिस्तान और नदियां 2. संकल्प 3. हिमालय 4. ईश्वर की कृपा 5. सांसारिकता, संसार से प्रेम, दुनिया से मुहब्बत 6. रोआं-रोआं 7. कृतज्ञता प्रकाशन 8. जाप 9. उपमा और रूपक 10. हो जा 11. हत्या के दृश्य 12. समान सोच, समान विचार 13. विश्व-व्यवस्था, दुनिया की व्यवस्था।



# कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| ग़ज़ल | –हफ़ीज़ मेरठी | 3 |
| क़ुरआन ज्योति | | 5 |
| हदीस मंजरी | | 6 |
| कब सुधरेंगी उ०प्र० और दिल्ली की छवियां (संपादकीय) | | 7 |
| मध्यकालीन भारत में सहिष्णुता (आपके पत्र) | | 8 |
| हज़रत मुलैका बिन्त मालिक रज़ि० (नेकी के सिपाही) | –तालिब हाशमी | 11 |
| क़ियामत या महाप्रलय | –मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां | 13 |
| इस्लामी सभ्यता की विशेषताएं | –मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई | 19 |
| नमाज़ | –अफ़ज़ल हुसैन | 23 |
| गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन | –रश्मि शर्मा | 25 |
| नेक राह पर चलना सीखें | –अभिराम सत्यज्ञ 'जयशील' | 25 |
| भारतीय भाषाओं और हिन्दी के विकास में मुस्लिम योगदान | –डॉ० राज सक्सेना | 26–27 |
| इस्लाम में न्याय, सहानुभूति और सद्व्यवहार | –मौलाना सैयद हामिद अली | 33 |
| तमिस्रा से जूझते, चिराग़ ग़ज़लों के (पुस्तक-समीक्षा) | –डॉ० रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' | 37 |
| एक हत्या ऐसी भी (कहानी) | –डॉ० परमलाल गुप्त | 39 |
| साहित्य समाचार | –संपादन प्रभाग | 44 |
| खेती पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कसता शिकंजा | –भारत डोगरा, बाबूलाल नागा | 45 |
| बालवीथी | | 50 |

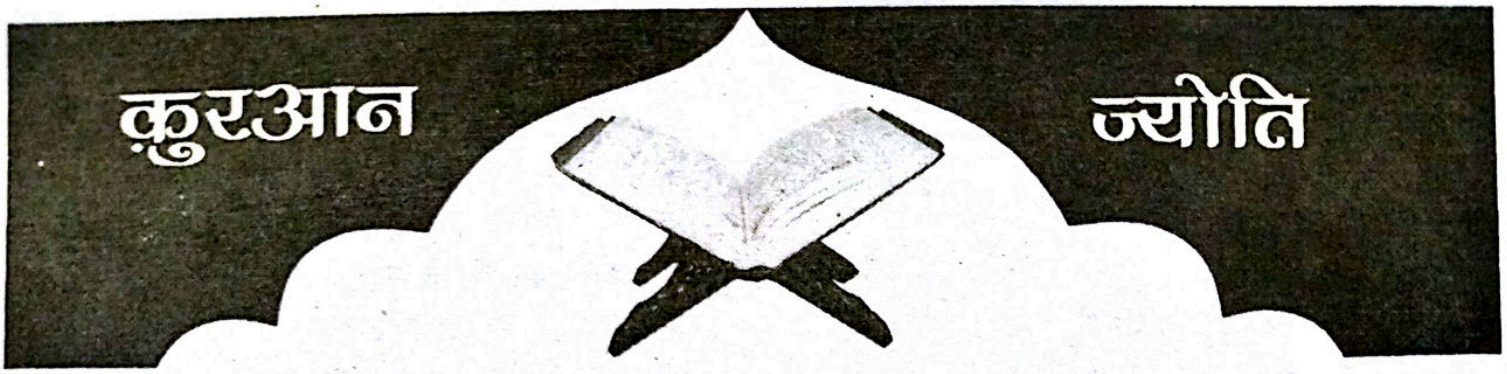


(17) अतः सच तो यह है कि तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उनको क़त्ल किया, और ऐ नबी ! तूने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका ।[14] (और ईमान वालों के हाथ जो इस काम में जो इस्तेमाल किये गये) तो यह इसलिए था कि अल्लाह ईमान वालों को एक उत्तम परीक्षा से सफलतापूर्वक गुज़ार दे, निश्चित ही अल्लाह सुनने और जानने वाला है । (18) यह मामला तो तुम्हारे साथ है और काफ़िरों के साथ मामला यह है कि अल्लाह उनकी चालों को कमज़ोर करने वाला है । (19) (इन काफ़िरों से कह दो,) "अगर तुम निर्णय चाहते थे तो लो, निर्णय तुम्हारे सामने आ गया ।[15] अब बाज़ आ जाओ, तुम्हारे ही लिए बेहतर है, वरना फिर पलटकर उसी मूर्खता को दोहराओगे तो हम भी उसी सज़ा को दोहराएंगे और तुम्हारा जत्था, भले ही वह कितना बड़ा हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा। अल्लाह ईमान वालों के साथ है ।"

(20) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और आदेश सुनने के बाद उससे मुंह न फेरो । (21) उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना, हालांकि वे नहीं सुनते ।[16] (22) निश्चय ही अल्लाह के नज़दीक सबसे बुरे क़िस्म के जानवर वे बहरे-गूंगे लोग हैं[17] जो बुद्धि से काम नहीं लेते । (23) अगर अल्लाह जानता कि इनमें कुछ भी भलाई है तो वह अवश्य ही उन्हें सुनने का सौभाग्य प्रदान करता । (लेकिन भलाई के बिना) अगर वह उनको सुनवाता तो वे कतराते हुए मुंह फेर जाते ।[18]

–क़ुरआन, 8 : 17-23

---

14. बद्र की लड़ाई में जब मुसलमानों और इस्लाम-शत्रुओं की सेनाएं आमने-सामने आ गयीं और लड़ाई छिड़ जाने का समय आ गया तो हुज़ूर (सल्ल०) ने मुट्ठी-भर रेत हाथ में लेकर 'शाहतिल वजूह' अर्थात् उनके चेहरे झुलस जाएं कहते हुए शत्रुओं की ओर फेंकी और इसके साथ ही आपके इशारे से मुसलमान एक साथ शत्रुओं पर हमलावर हुए । इसी घटना की ओर संकेत है । अर्थ यह है कि हाथ तो रसूल का था, मगर चोट अल्लाह की ओर से थी ।

15. मक्का से चलते समय मुशरिकों ने काबे का परदा पकड़कर दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह ! दोनों गिरोहों में से जो बेहतर है उसको विजय प्रदान कर और अबू जहल ने मुख्य रूप से कहा था कि ऐ अल्लाह ! हममें से जो सत्य पर हो उसे विजय प्रदान कर और जो असत्य पर हो उसे रुसवा कर दे । चुनांचे अल्लाह ने उनकी मुंह मांगी दुआएं शब्दशः पूरी कर दीं और निर्णय करके बता दिया कि दोनों में से कौन अच्छा और सत्य पर है ।

16. यहां सुनने से तात्पर्य वह सुनना है जो मानने और स्वीकार करने के अर्थ में होता है । संकेत उन मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) की ओर है जो ईमान को स्वीकार तो करते थे, परन्तु आदेशों के पालन से मुंह मोड़ जाते थे ।

17. अर्थात जो न सत्य सुनते हैं, न सत्य बोलते हैं। जिनके कान और जिनके मुंह सत्य के लिए बहरे और गूंगे हैं ।

18. अर्थात जब इन लोगों में स्वयं सत्यवादिता और सत्य के लिए काम करने की भावना नहीं है तो इन्हें अगर आदेश के पालन में लड़ाई के लिए निकल आने का सौभाग्य प्रदान भी कर दिया जाता तो ये संकट का अवसर देखते ही निःसंकोच भाग निकलते और इनका साथ तुम्हारे लिए लाभप्रद होने के बजाय उलटा हानिप्रद बन जाता ।

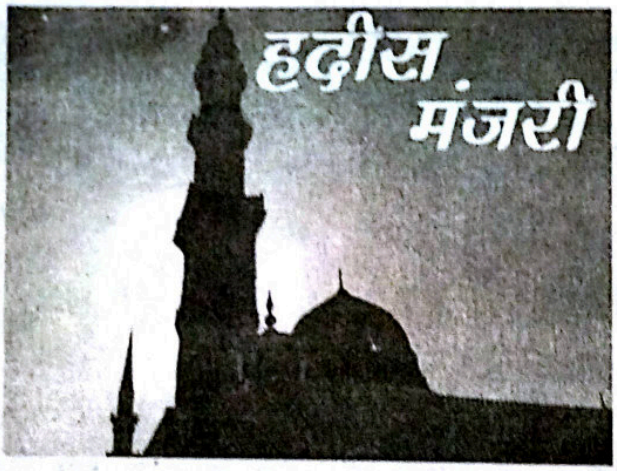


# परहेज़गारी अपनाना और सन्देहयुक्त चीज़ों को त्यागना

● हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "हलाल भी स्पष्ट है और हराम भी स्पष्ट है और इन दोनों के बीच कुछ चीज़ें संदिग्ध हैं जिनको बहुत से लोग नहीं जानते । अत: जो व्यक्ति संदिग्ध चीज़ों से बचा, उसने अपने दीन और अपनी प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखा और जो व्यक्ति उन संदिग्ध चीज़ों में पड़ गया, वह हराम में पड़ गया । उसकी मिसाल उस चरवाहे जैसी है जो वर्जित चरागाह के आसपास अपने जानवरों को चराता है और हमेशा इसकी आशंका रहती है कि कोई जानवर उसके अन्दर घुस जाए। सावधान ! प्रत्येक बादशाह की एक वर्जित चरागाह होती है । सावधान ! अल्लाह की वर्जित चरागाह उसकी (हराम की हुई) वर्जित चीज़ें हैं । सावधान ! शरीर में मांस का एक लोथड़ा है जब वह स्वस्थ और ठीक रहता, तो सारा शरीर स्वस्थ और अच्छा रहता है, और जब वह बिगड़ गया, तो सारा शरीर बिगड़ जाता है । सावधान रहो कि वह (मांस का लोथड़ा) हृदय है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम । दोनों ने इस हदीस को कई तरीक़े से मिलते-जुलते शब्दों में रिवायत किया है ।

● हज़रत नौआस बिन समआन (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "नेकी और भलाई सुशीलता का नाम है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटक पैदा करे और तुम यह पसन्द न करो कि लोग उसे जान लें ।"

–मुस्लिम

● हज़रत वाबिसह बिन माबद (रज़ि॰) कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थिति हुआ तो आपने कहा : "तुम नेकी के बारे में पूछने आये हो ?" मैंने कहा : हां । तो आपने कहा : "अपने दिल से पूछो । नेकी वह है जिससे मन संतुष्ट हो और हृदय भी संतुष्ट हो । और गुनाह वह है जो तुम्हारे मन में सन्देह पैदा करे और सीने (दिल) में खटके । यद्यपि लोग उसके बारे में कुछ भी फ़त्वा दें और तुझसे फ़त्वा चाहें ।"

–यह हदीस हसन है । अहमद और दारमी दोनों ने अपनी मुसनदों में रिवायत किया है ।

# मृत्यु का स्मरण

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मेरे कंधों को पकड़ कर कहा : "दुनिया में ऐसे रहो जैसे तुम परदेसी हो या राहगीर ।"

हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) कहा करते थे कि जब तुम शाम करो, तो सुबह की प्रतीक्षा न करो और जब सुबह करो, तो शाम की प्रतीक्षा न करो और स्वस्थ अवस्था में अस्वस्थ अवस्था के लिए और जीवन में मृत्यु के लिए तैयारी कर लो ।

–बुख़ारी

# क़ब्रों की ज़ियारत

● हज़रत बुरीदह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मैंने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था, लेकिन अब उनकी ज़ियारत कर लिया करो ।"

–मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि जिस रात को अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के ठहरने की बारी हमारे यहां होती तो आप रात के आख़िरी हिस्से में निकलकर क़ब्रिस्तान बक़ीअ जाते और कहते : "तुम पर सलामती हो मोमिन लोगों के इस घर के वासियो ! और जिस चीज़ का तुमसे निर्धारित समय के अन्तर्गत वादा किया गया है, वह कल तुम्हें प्राप्त हो और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम भी तुमसे मिलने वाले हैं । ऐ अल्लाह, बक़ीअ अल-ग़रक़द वालों को क्षमा कर दे ।"

–बुख़ारी

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

संपादकीय

# कब सुधरेंगी उ०प्र० और दिल्ली की छवियां ?

उत्तर प्रदेश और दिल्ली में पिछले तीन वर्षों में मानवाधिकार हनन की इतनी घटनाएं घटित हो चुकी हैं कि ये दोनों राज्य इनमें पूरे देश में क्रमशः पहले और दूसरे स्थान को बनाये हुए हैं । राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पास इस वर्ष के आरंभिक तीन महीनों में जो 18772 मामले आये हैं, उनमें 65.57 प्रतिशत अर्थात लगभग दो तिहाई मामले उत्तर प्रदेश और दिल्ली के हैं । इस अवधि में उ०प्र० में मानवाधिकार हनन के सर्वाधिक 11091 मामले सामने आये हैं, जबकि राजधानी दिल्ली जो देश की राजधानी है, 1219 मामले लेकर दूसरे पायदान पर बनी रही । हरियाणा में 719, उड़ीसा में 632 और बिहार में 615 मामले सामने आने में सफल हुए । इन सभी में पुलिस उत्पीड़न की घटनाएं सबसे अधिक हैं । देश में उ०प्र० ही राज्य है, जहां से पुलिस के ख़िलाफ़ सर्वाधिक 4242 शिकायतें मानवाधिकार आयोग के पास पहुंची । इन शिकायतों में फ़र्ज़ी मुठभेड़, बलात्कार, हिरासत में हत्या आदि शामिल हैं । कुछ लोग कहते हैं कि चूंकि उत्तर प्रदेश बड़ा राज्य है, इसलिए ये आंकड़े अधिक हैं । यह कोई तार्किक कथन नहीं है, बल्कि प्रशासनिक दोषों को 'सुधारने' और ढांकने की कोशिश है । इसके विपरीत देश की राजधानी दिल्ली जो क्षेत्रफल में अल्प है, मानवाधिकार हनन के मामले में दूसरे स्थान पर रहती है । यहां की क़ानून-व्यवस्था की निगरानी का ज़िम्मा केन्द्र सरकार के पास होता है । प्रशासनिक लापरवाही और अक्षमता के नतीजे में मानव अधिकारों का हनन और दलन होता रहता है । यह कितनी चिंताजनक और गंभीर तथ्य है कि एक ओर तो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र देश की विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का केन्द्रीय क्षेत्र है, वहीं दूसरी ओर मानवाधिकार हनन में भी शीर्ष पर है । यदि जनसंख्या की दृष्टि से यथास्थिति पर ध्यान दें, तो यह कहा जा सकता है कि दिल्ली मानवाधिकार हनन में अव्वल नंबर पर है ।

पिछले तीन वर्षों से यही चिन्ताजनक स्थिति बनी हुई है । गृहमंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, पिछले तीन वर्षों में उ०प्र० में मानवाधिकार हनन के एक लाख 63 हज़ार मामले सामने आये, जबकि दिल्ली में 16871 मामले दर्ज किये गये । इस अवधि में पूरे देश में 272408 मामले सामने आये । 2007-2008 में 100302, 2008-2009 में 90512 और 2009-2010 में 81594 मामले दर्ज किये गये । वस्तु स्थिति यह है कि केवल उत्तर प्रदेश में जनवरी से मार्च 2011 के बीच 11091 मामले सामने आये । वास्तव में सरकारी अधिकारी और कर्मचारी ही अधिकांशतः मानवाधिकार उल्लंघन करते हैं । राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने इन घटनाओं की 17 श्रेणियां बनायी हैं । इनमें पुलिस, सुरक्षा बलों और सुरक्षा एजेंसियां द्वारा मानवाधिकार हनन की सबसे अधिक संख्या वाली श्रेणियां हैं । आयोग का मानना है कि इनकी कार्यप्रणाली में यदि अपेक्षित सुधार हो जाए, तो पूरे देश में मानवाधिकार हनन की घटनाओं पर काफ़ी हद तक क़ाबू पाया जा सकता है । यह बात सच भी है । केन्द्रीय गृह सचिव जी०के० पिल्लई का भी यही मानना है । दिल्ली पुलिस मुख्यालय के औचक निरीक्षण पर पिछले 10 मई को पहुंचे श्री पिल्लई ने दिल्ली पुलिस की आम जनता में फीकी पड़ती छवि पर चिंता जतायी और इस छवि को ठीक करने के उपाय भी प्रस्तावित किये । उन्होंने पुलिस अधिकारियों को अपने काम को और बेहतर तरीक़े से करने के साथ जनता के साथ बेहतर तालमेल बनाये रखने पर ज़ोर दिया । श्री पिल्लई ने स्पष्ट रूप से कहा कि जब तक जनता संतुष्ट नहीं होती, तब तक पुलिस के काम को बेहतर नहीं समझा जा सकता । वास्तविकता यह है कि पूरे देश में पुलिस की छवि ख़राब है । इसे ठीक करने के प्रयासों में प्रभावी उपाय यही हो सकता है कि उसके कामकाज को दुरुस्त और बेहतर बनाया जाए । सभी में उत्तरदायित्व का बोध और ईशभय पैदा किया जाए, ताकि सुव्यवस्था की ओर अग्रसर होने के साथ ही सभी के हक़ों और अधिकारों की समुचित संरक्षा हो सके ।

# मध्यकालीन भारत में सहिष्णुता

हमारे इतिहास में साम्प्रदायिक सहिष्णुता, धार्मिक सद्भावना तथा सामाजिक समरसता के अनेक उदाहरण मौजूद हैं । यदि निष्पक्ष ढंग तथा पूर्वाग्रहमुक्त भाव से इतिहास के पृष्ठों का अध्ययन तथा अवलोकन किया जाए तो ज्ञात होता है कि मध्यकालीन भारत में अनेक हिन्दू तीर्थ स्थलों को मुस्लिम शासकों का न केवल संरक्षण प्राप्त था बल्कि उन्होंने अनेक हिन्दू मंदिरों के निर्माण में हर प्रकार से आर्थिक सहयोग प्रदान किया । इन तीर्थ स्थानों के विकास जीर्णोद्धार तथा सुन्दरीकरण में मुस्लिम शासकों का महत्वपूर्ण योगदान था ।

इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि मथुरा और वृन्दावन के लगभग 35 मंदिरों को मुग़ल शासकों अकबर, जहांगीर तथा शाह जहां से समय-समय पर सहायता मिलती रही है । जिसके दस्तावेज़ आज तक उपलब्ध हैं । इन मंदिरों के लिए लगभग एक हज़ार बीघे भूमि की व्यवस्था की गयी थी । इन दस्तावेज़ों से यह भी विदित होता है कि इन मंदिरों की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने में मुग़ल शासकों तथा उनके अधीनस्थ अधिकारियों ने बहुत तत्परता तथा सक्रियता प्रदर्शित की । इसी प्रकार इतिहास गवाह है, अवध के नवाबों तथा अधिकारियों ने अयोध्या में अनेकानेक मंदिरों का निर्माण करवाया अथवा उनके निर्माण में आर्थिक तथा मौलिक सहयोग किया । उन्होंने मंदिरों की मरम्मत करवायी तथा उनके लिए आवश्यकतानुसार भूमि दान की । नवाब सफ़दरजंग ने अयोध्या में हनुमानगढ़ी मंदिर के निर्माण के लिए भूमि प्रदान की । इसी तरह आसिफुद्दौला के दीवान ने भी इस मंदिर के लिए सहायता की थी ।

हिन्दू तीर्थों तथा मंदिरों के लिए मुस्लिम शासकों द्वारा अनेक रूपों में की गयी सहायता के अनेकानेक दृष्टांत मिलते हैं । एक मुग़ल शासक ने चित्रकूट में बालाजी के मंदिर के लिए 330 बीघे करमुक्त भूमि की व्यवस्था की थी जिसका दस्तावेज़ आज तक मंदिर में मौजूद है । इसी प्रकार के दस्तावेज़ तीर्थराज प्रयाग, वाराणसी, उज्जैन तथा गुवाहाटी के प्राचीन मंदिरों में भी मिले हैं । दक्षिण भारत में टीपू सुलतान ने अपने राज्य क्षेत्रान्तर्गत अनेक देवालयों को खुले दिल से दान किया । टीपू सुल्तान के महल के पास ही में अनेक मंदिर बने हुए थे । दकन के राजा इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय ने अपने गीतों में अनेक स्थानों पर हिन्दू देवी-देवताओं का उल्लेख किया है । मुग़ल बादशाह अकबर के इबादतख़ाने में हर धर्म के अनुयायियों की फ़रियाद सुनी जाती थी । उनके द्वारा स्थापित अनुवाद घर में रामायण और गीता का फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया गया । सुप्रसिद्ध कवि नज़ीर अकबराबादी ने अपनी कविता में हिन्दू धर्मावलम्बियों के तीज-त्योहारों तथा देवी-देवताओं का सुन्दर वर्णन किया है । मुग़ल शहज़ादा दारा शिकोह को अनेक हिन्दू धर्म ग्रंथों का अच्छा ज्ञान था । कश्मीर के राजा ज़ैनुल आब्दीन सार्वजनिक रूप से हिन्दू त्योहारों में शामिल होते थे तथा उन्होंने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया ।

इतिहास के अनुसार मारवाड़ के राजा ने बीकानेर के राजा को समर भूमि में पराजित कर दिया तथा युद्ध में बीकानेर का राजा लड़ता हुआ मारा गया । इस स्थिति में उसके पुत्रों कल्याण दास तथा भीम को शेरशाह सूरी के दरबार में शरण मिली थी । इसी प्रकार शेरशाह सूरी ने हुमायूं को जब परास्त किया तो अमरकोट के राणा ने शरण दी जहां अकबर का जन्म हुआ । इससे यह भलीभांति स्पष्ट है कि मध्यकाल में मुस्लिम शासकों का हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण कभी संकुचित नहीं था । उन्होंने सभी धर्मों का सम्मान किया । हिन्दू कट्टरपंथियों द्वारा उनके हिन्दू धर्म संस्कृति से दूर रहने तथा मंदिरों को विध्वंस करने की शिकायत असत्य तथा अवास्तविक है ।

**विद्या प्रकाश**
जौनपुर, उत्तर प्रदेश

## आजीविका और धनोपार्जन

गांधी जी ने कहा था कि प्रत्येक मनुष्य को आजीविका पाने का अधिकार है, मगर धनोपार्जन का अधिकार किसी को नहीं । जो आजीविका से अधिक धन लेता है, वह जाने-अनजाने दूसरों की आजीविका छीनता है ।

अधिक धन कमाने से बोझ बढ़ता है, जिस प्रकार अधिक बोझ से गधे की कमर टूटती जाती है । अपनी भारी दौलत के बोझ को ढोने से मनुष्य में लोभ बढ़ता है । मौत ही आकर उस बोझ को उतारती है और फिर जाता है इन्सान केवल ख़ाली हाथ । आज चहुंओर एक होड़-सी लग रही है धन संग्रहण की और इसीलिए घोटालों पर घोटाले और वे भी हज़ारों करोड़ रुपये के हो रहे हैं फिर भी मनुष्य को संतोष नहीं । प्रत्येक धर्म में कहा जाता है कि अपनी पूंजी का एक भाग ग़रीबों को दान किया जाए । ग़रीबों को पढ़ाया जाए ताकि उनके ज्ञान में वृद्धि हो और वे इन्सानियत के रास्ते पर चलें । क़ुरआन में ज़कात और ख़ैरात का महत्वपूर्ण स्थान है । देखने में आ रहा है कि आज का इन्सान इन्सानियत पर चलना ही नहीं चाहता, चाहे बाद में उसे कितनी ही परेशानी उठानी पड़े ।

**घेवरचन्द गोदीका**
जयपुर

## खाद्य-सामग्री की बर्बादी रोकी जाए

'कान्ति' मासिक का अप्रैल 2011 अंक फूलों की ख़ुशबू से महकते मुख्य पृष्ठ के साथ प्राप्त हुआ । पूरी पत्रिका पढ़ी । सभी रचनाएं अच्छी लगीं । शादी-विवाह आदि में लोग बहुत अधिक व्यंजन परोसने लगे हैं, जिससे खाद्य सामग्री की बर्बादी होती है । लोग खाते कम हैं, जूठन अधिक फेंकते हैं । दूसरी ओर देश में ऐसे लोगों की भी एक बड़ी संख्या है, जिन्हें दो वक़्त का भोजन भी नसीब नहीं होता । शादी-विवाह या किसी भी भोज में अधिक व्यंजन परोसने पर क़ानूनी पाबन्दी लगायी जानी चाहिए । महंगी शादियों पर सरकार को टैक्स लगा देना चाहिए । इन बड़े विवाह एवं अन्य समारोह में बिजली की भी बहुत बर्बादी होती है । जेनेरेटर से बिजली उपलब्ध करने में डीजल की खपत बहुत अधिक होती है और पर्यावरण भी प्रदूषित होता है । प्रशासन को इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए ।

### जनलोकपाल क़ानून

वर्तमान समय में चल रही अराजक स्थिति में अन्ना हज़ारे ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए भ्रष्टाचार के निवारण के वास्ते सरकार को मजबूर कर दिया कि वह जनलोकपाल क़ानून बनवाने के लिए प्रारूप समिति का गठन करे और अधिसूचना जारी करे । अन्ना का साथ आम जनता ने पूरा-पूरा दिया और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन के लिए सड़कों पर उतर आयी । इसी प्रकार सरकार के ग़लत आचरण के विरुद्ध अगर जनता संगठित हो जाए तो सरकार को झुकाया जा सकता है । लोकपाल बिल पास हो जाने पर निश्चय ही भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा ।

### निर्माण तिथि

जब हर पैक वस्तु पर निर्माण तिथि और उस वस्तु का अधिकतम मूल्य अंकित किया जाता है तो बीड़ी पर ये अंकित क्यों नहीं होता है ?

**यशपाल जैन आदर्श**
जयपुर

## घातक है दुष्प्रचार

'कान्ति' का अप्रैल अंक हस्तगत हुआ, धन्यवाद ! आपका संपादकीय लेख ''मिथ्यावादी दुर्भावना न पनपाएं'' पढ़ा । निस्संदेह दुष्प्रचार मानव समाज के लिए घातक एवं हानिकारक है । इससे दुष्प्रचार फैलाने वाले का आंशिक भला ही हो सकता है, लेकिन सच्चाई प्रकट होने पर उसे मुंह की खानी पड़ती है । उसे शर्मसार होना पड़ता है ।

'नेकी के सिपाही' स्तंभ जीने का सलीक़ा सिखाता है । 'काफ़िर' और 'जिहाद' शब्दों को अच्छे से जानने का अवसर मिला । विशेष आयोजन के तहत औरतों के बारे में कल्याणकारी इस्लामी शिक्षाएं जानने को मिलीं । इस अंक में प्रकाशित कहानी और लघुकथा भी जानदार लगी ।

कुल मिलाकर अंक पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक लगा ।

**सुरेन्द्र कुमार अंशुल**
अम्बाला

## उल्लेखनीय उपयोग

सराहणीय और संग्रहणीय पत्रिका 'कान्ति' का स्थानीय रूप से बड़ा उल्लेखनीय उपयोग हो रहा है ।

**पंडित बी॰एन॰ मुदगिल**
रोहतक, हरियाणा

## बधाई

हाल ही में संपन्न वर्ल्ड कप क्रिकेट प्रतियोगिता में भारतीय क्रिकेट टीम द्वारा शानदार प्रदर्शन से वर्ल्ड कप जीतने का अवसर मिला । कप्तान धोनी व समस्त टीम को मैं आपकी पत्रिका 'कान्ति' के माध्यम से बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि अगला क्रिकेट वर्ल्ड कप का ख़िताब भी भारत ही जीते ।

**सुरेन्द्र शर्मा गौतम**
जयपुर

## शुभकामना

मुझे खुशी है कि आज आपको पत्र लिख रहा हूं । क्योंकि मैंने कई बार आपको पत्र लिखने की कोशिश की परन्तु समय न होने के कारण लिखे हुए पत्र वापस घर आ जाते । लेकिन अब पक्के इरादे से आपको पत्र लिख रहा हूं कि आपके द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'कान्ति' हमारे साथ-साथ हमारे गांव वालों को बहुत अच्छी लगती है । हम मासिक पत्रिका के आने की राह देखते रहते हैं । साथ में एक व्यक्ति इस्लाम के ख़िलाफ़ था, तो जब मैं 'कान्ति' पढ़ रहा था, उसने एक-दो अक्षर कुरआन के देखे । फिर उसने मुझ से मासिक पत्रिका 'कान्ति' मांग ली और सारी पढ़ ली । अब वह उसका प्रशंसक हो गया है और कई लोग 'कान्ति' में आने वाली आयात पढ़कर कुरआन शरीफ़ ही पढ़ने लग गये । अब वे कुरआन शरीफ़ के साथ-साथ 'कान्ति' के भी प्रशंसक हैं । वे 'कान्ति' को धन्यवाद करते हैं कि इसने अल्लाह के प्रति उसकी भावना को उजागर किया । मैं सदैव 'कान्ति' का आभारी रहूंगा ।

मैं 'कान्ति' का नियमित प्रशंसक हूं कि आपने इतनी अच्छी मासिक पत्रिका बनाने की कोशिश की । मासिक पत्रिका 'कान्ति' में हर पेज पर कुछ न कुछ ऐसा पढ़ने को मिल जाता है, जो दिल को भा जाता है । आपके द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका को हर व्यक्ति पढ़ सकता है ऐसा कोई भी विषय नहीं, जिससे शर्म महसूस हो जैसा आजकल हो रहा है । और मैं अंत में यही कहता हूं कि आप इसी तरह मासिक पत्रिका 'कान्ति' को प्रकाशित करते रहें । हमको आपके द्वारा पत्रिका बहुत अच्छी लगती है और आप इसी तरह मासिक पत्रिका प्रकाशित करते रहें । मैं अल्लाह से यही दुआ करता हूं कि मासिक पत्रिका 'कान्ति' पूरे विश्व में विख्यात हो ताकि जो भी इसे पढ़े इससे कुछ सीख ले सके ।

**अनीसुद्दीन**
निडानी, जीन्द, हरियाणा

## आलोक

'कान्ति' मार्च 2011 अंक आद्योपांत पढ़ा । 'इस्लाम में मानवाधिकार की सुरक्षा के लिए प्रावधान' आलेख पढ़कर यह ज्ञात हुआ कि वर्षों पहले इस्लाम में किस प्रकार मानव अधिकारों को संतुलित दृष्टिकोण से देखा गया था ।

'अफ़लातूनों की बस्ती' कहानी भी अच्छी लगी । कहानी के समापन अंश ने बड़े ही विश्वसनीय प्रबल ढंग से आज के हालात का अंकन किया है ।

'हिन्दू धर्म और इस्लाम' नामक प्रस्तुति को पढ़ने से नयी चीज़ें आलोक में आयीं ।

**अभिराम सत्यज्ञ जयशील**
हथुआ, बिहार

## औरों के हित जी तू प्रानी

यह दुनिया तो आनी-जानी ।
औरों के हित जी तू प्रानी ।।

भूखे को अपनी रोटी दे ।
प्यासे को लोटा भर पानी ।।

नेकी की औ' हमदर्दी की ।
राह हमें भी तो अपनानी ।।

भाईचारा, प्यार, मुहब्बत ।
की दीवाली हमें मनानी ।।

जो तुम दोगे वही मिलेगा ।
कहते आये सारे ज्ञानी ।।

नील गगन भी झुक जाएगा ।
जो तूने ठानी तो ठानी ।।

**शुचि वंदना**
अमर कालोनी, लाजपत नगर, नयी दिल्ली


**POSTAL LIBRARY**




Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
**Mob. : 9300929747, 9300101373**

# हज़रत मुलैका बिन्त मालिक (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत मुलैका बिन्त मालिक अंसारिया (रज़ि॰) ख़ज़रज के प्रतिष्ठित ख़ानदान बनू नज्जार में से थीं। उनकी शादी हज़रत मलहान बिन ख़ालिद नज्जारी से हुई थी। हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) और हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) इन्हीं की बेटियां थीं। इन दोनों का शुमार अज़ीमुल मर्तबत सहाबियात में होता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के मशहूर ख़ादिम हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) के बेटे थे। इस तरह हज़रत मुलैका (रज़ि॰) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) की नानी थीं। आपने हिजरत से कुछ दिनों पहले अपनी बेटियों के साथ इस्लाम क़ुबूल किया था।

सही बुख़ारी में है कि एक बार हज़रत मुलैका (रज़ि॰) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की दावत की और ख़ुद से खाना पकाया। आप (सल्ल॰) ने खाना खाने के बाद फ़रमाया : "आओ, मैं तुम को नमाज़ पढ़ाऊं।"

घर में उस समय केवल एक पुरानी और बोसीदा चिटाई थी जिसका रंग काला पड़ चुका था। हज़रत अनस (रज़ि॰) ने पहले उसको पानी से धोया और फिर उसे नमाज़ के लिए बिछाया।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इमामत फ़रमायी। हज़रत मुलैका (रज़ि॰), हज़रत अनस (रज़ि॰) और तमीम (नाम का एक ग़ुलाम लड़का) सफ़ बांध कर खड़े हुए। आप (सल्ल॰) ने दो रिकअत नमाज़ पढ़ाई और वापस तशरीफ़ ले गये।

## 2. हज़रत उम्मे सैफ़ अंसारिया (रज़ि॰)

हज़रत उम्मे सैफ़ अंसारिया (रज़ि॰) का अस्ली नाम क्या था, यह किसी को नहीं मालूम, लेकिन वह अपनी कुन्नियत उम्मे सैफ़ के नाम से ही मशहूर थीं।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बेटे हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) को हज़रत उम्मे सैफ़ अंसारिया (रज़ि॰) ने ही दूध पिलाया था। सन 8 हिजरी में जब हज़रत मारिया क़िब्तिया (रज़ि॰) ने हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) को जन्म दिया तो अंसार की सभी महिलाओं ने यह इच्छा व्यक्त की कि आप (सल्ल॰) के प्यारे बेटे हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) को दूध पिलाने की ज़िम्मेदारी उन्हें दी जाए। लेकिन आप (सल्ल॰) इस सेवा के लिए हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) को ही चुना।

हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) मदीना मुनव्वरा से 4-5 किमी॰ दूर अवाली क़स्बे में रहती थीं। आप (सल्ल॰) हर कुछ दिनों पर हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) को देखने के लिए मदीना मुनव्वरा से पैदल ही हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) के घर पर तशरीफ़ ले जाते। बच्चे को गोद में लेते, मुंह चूमते, फिर मदीना वापस आ जाते।

हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) के पति लोहार थे इसलिए उनका घर धुंवें से भरा रहता था। लेकिन आप (सल्ल॰) उस धुंवें को गवारा कर लिया करते थे।

हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) की मृत्यु हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) के घर पर ही हुई। आप (सल्ल॰) को जब यह पता चला कि इबराहीम (रज़ि॰) की तबियत बहुत ख़राब है तो आप (सल्ल॰) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि॰) के साथ वहां पहुंचे। उस समय हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) नज़ा की हालत में थे। आप (सल्ल॰) ने उन्हें गोद में लिया और आप (सल्ल॰) की आंखों से आंसू जारी हो गये।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि॰) ने घबड़ा कर पूछा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), आपकी यह क्या हालत है ?"

कहा, "यह रहमत और शफ़क़त है।"

हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) ने दोबारा अपनी बात दोहरायी तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "आंखें आंसू बहाती हैं। दिल ग़मगीन है, लेकिन हम वही कहेंगे जो हमारे रब की मर्ज़ी हो। ऐ इबराहीम (रज़ि॰)! हम तेरी जुदाई में बहुत दुखी हैं।"

हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) की आयु के बारे में बहुत

मतभेद है । उनकी कम से कम आयु दो महीना दस दिन और अधिक से अधिक एक वर्ष दस महीने और 6 दिन बतायी जाती है । इसी से पता चलता है कि हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) ने हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) को कितने दिनों तक दूध पिलाया ।

हज़रत उम्मे सैफ़ (रज़ि॰) के बारे में और अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है । लेकिन उनकी यही श्रेष्ठता क्या कम है कि उन्हें रहमते आलम (सल्ल॰) के प्यारे बेटे हज़रत इबराहीम (रज़ि॰) की रज़ाई मां बनने का गौरव प्राप्त है । आप (सल्ल॰) बार-बार उनके घर गये यह भी कम बड़े सम्मान की बात नहीं है ।

### 3. हज़रत कुबशा (रज़ि॰)

हज़रत कुबशा बिन्त राफ़े (रज़ि॰) हज़रत साअद बिन मुआज़ (रज़ि॰) की मां थीं । आपके पिता का नाम राफ़े बिन उबैद था और ख़ानदान ख़ुदरा से ताल्लुक़ रखती थीं । हिजरते नबवी से पहले ही आप इस्लाम क़ुबूल कर चुकी थीं । प्रतिष्ठित महिला थीं और शेरो-शायरी भी कर लिया करती थीं । उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) की गहरी सहेलियों में से थीं ।

अहज़ाब की जंग में हज़रत कुबशा (रज़ि॰) बनू हारिसा की गढ़ी में हज़रत आइशा (रज़ि॰) के साथ बैठी थीं कि उनके बेटे हज़रत साअद बिन मुआज़ (रज़ि॰) उनके सामने से गुज़रे । हज़रत कुबशा (रज़ि॰) ने पुकार कर कहा : "बेटे ! दौड़ कर जा, तूने बड़ी देर कर दी ।"

इस जंग में हज़रत साअद (रज़ि॰) बुरी तरह घायल हो गये और कुछ दिनों के अन्दर उसी ज़ख़्म के कारण शहीद हो गये ।

हज़रत कुबशा (रज़ि॰) को अपने आज्ञाकारी बेटे की मृत्यु का बहुत दुख हुआ और उन्होंने अपने बेटे की याद में रो-रोकर बहुत से मातमी अशआर पढ़े जिनमें हज़रत साअद (रज़ि॰) की तारीफ़ की गयी थी ।

आप (सल्ल॰) ने जब इन अशआर को सुना तो कहा : "जितनी रोने वाली औरतें हैं वे झूठ बोलती हैं लेकिन उम्मे साअद सच कहती हैं ।"

हज़रत कुबशा (रज़ि॰) अपने बेटे की शहादत के बहुत दिनों बाद तक ज़िन्दा रहीं ।


AVEZ Azim Shaikh

Mohidin Properties & Holdings
Mohidin Metal Industries
Mohidin Auto Care Centre
Mohidin Earthmovers

O-1, Commerce Centre, Near Old Bus Stand,
Vasco-da-Gama, Goa, India-403802
Phone : 0832-2512415, 2512418, 2514755
Email : avez@mohidins.com
Website : www.mohidingroup.com

# क़ियामत या महाप्रलय

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

वर्तमान जगत के विषय में क़ुरआन बताता कि यह अनश्वर नहीं है । वर्तमान जगत की रचना सदैव के लिए नहीं हुई है । इसकी निश्चित आयु है और उसी आयु के भीतर इसकी उपयोगिता है । उसके पश्चात जीवन एक ऐसे विकसित लोक की अपेक्षा करता है जिसमें वर्तमान लोक की न्यूनताओं की परिपूर्ति संभव हो सके । वर्तमान लोक की न्यूनताएं क्या हैं ? और उनकी पूर्ति कैसे होगी ? इस पर हम आगे चलकर विचार करेंगे ।

वर्तमान जगत का अध्ययन बताता है कि यहां किसी भी चीज़ को भी स्थायित्व प्राप्त नहीं है । प्रत्येक वस्तु की एक सीमित आयु है । अपनी आयु पूरी करके प्रत्येक वस्तु नष्ट हो जाती है । सामूहिक रूप से यही मामला सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का भी है । इस ब्रह्माण्ड के विषय में यह विचार कि यह सदैव से है और इसी प्रकार सदैव ही बना रहेगा मात्र भ्रम है । इस जगत में जितनी भी शक्तियां काम कर रही हैं वे सबकी सब सीमित हैं उनका एक न एक दिन समाप्त हो जाना स्वाभाविक है । सूर्य जो प्रत्येक क्षण अपनी एक बड़ी शक्ति व्यय कर रहा है उसकी शक्ति भी एक दिन क्षीण हो जाएगी । यही स्थिति दूसरे ग्रहों और उपग्रहों की भी है । इसलिए सृष्टि की वर्तमान व्यवस्था सदैव बनी नहीं रह सकती ।

अब यह बात स्पष्ट हो गयी है कि ऊर्जा पदार्थ में परिवर्तित होती है और पदार्थ पुनः ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है । इसलिए पदार्थ या परमाणु को नित्य और अनश्वर समझना और उस पर अपनी कल्पनाओं का भवन खड़ा करना एक भ्रम के सिवा अपने में कोई वास्तविकता नहीं रखता । विज्ञान क़ियामत अथवा प्रलय का इन्कार नहीं, बल्कि पुष्टि करता है । अब प्रलय के संबंध में क़ुरआन की दी हुई सूचना और विज्ञान में कोई विरोध नहीं रहा । क़ुरआन कहता है कि वर्तमान जगत की एक सीमित एवं निश्चित अवधि है । इसे अनश्वर समझना भूल है : "हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ इनके बीच है केवल हक़ के साथ (सोद्देश्य) और एक नियत समय के लिए पैदा किया है ।" (46:3)

"उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम पर लगाया, हर चीज़ एक नियत समय के लिए चल रही है ।" (13:2)

वह निश्चित समय आ जाने पर एक प्रलयकारी दृश्य सामने होगा : "जिस दिन आकाश थरथरा रहा होगा । और पहाड़ चलते-फिरते होंगे ।" (52:9-10)

"जब सितारे मिट जाएंगे और जब आकाश फट जाएगा और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जाएंगे ।" (77:8-10)

"और धरती और पहाड़ उठा कर एक ही बार में चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जाएंगे । (69:14)

सारांश यह कि विश्व की वर्तमान व्यवस्था शेष न रहेगी । न सूर्य की यह रोशनी बाक़ी रहेगी और न ये अडिग पर्वत अपने स्थान पर स्थिर रह सकेंगे । एक महान विनाशकारी दृश्य होगा । सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सब के सब छिन्न-भिन्न हो जाएंगे ।

### क़ियामत के बाद

प्रलय का अर्थ यह कदापि नहीं कि सृष्टि का सिरे से अंत हो जाएगा और न यह बात है कि ये सब कुछ निरुद्देश्य होगा । बल्कि इस प्रलय के उदर से एक नये संसार और एक नये जीवन का उदय होगा, जैसा कि क़ुरआन ने स्पष्ट शब्दों में इसकी सूचना दी है :

"वह भीषण घटना, क्या है वह भीषण घटना ? और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह भीषण घटना ! जिस दिन लोगों का हाल यह होगा जैसे बिखरे हुए पतंगे हों और पहाड़ों का हाल यह होगा जैसे धुना हुआ रंजित ऊन हो । तो जिस किसी की तोले भारी रहीं, तो उसे एक मन-भाता जीवन प्राप्त होगा । और रहा वह जिसकी तोलें हल्की रहीं, तो उसका ठिकाना गहरी खाई होगी ! और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है ! आग है दहकती हुई ।" (101:1-11)

"जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जाएगी, और तुम गरोह के गरोह चले आओगे और आकाश खोल दिया जाएगा तो उसके द्वार ही द्वार होंगे । और पहाड़ चलाये जाएंगे तो वे मरीचिका होकर रहेंगे ।" (78:18-20)

"वह दिन जबकि ये क़ब्रों से तेज़ी से निकलेंगे, जैसे किसी निशाने पर दौड़े जा रहे हों, इनकी निगाहें झुकी हुई हैं, और इन पर ज़िल्लत छायी हुई है : यह है वह दिन

# AL-HERA LIBRARY

(Run and Managed by **Sabiha Welfare Trust,** Registration No. 5418/4603)

Near Road No. 10, Main Road, Jawahar Nagar, P.O. Azadnagar,
Mango, Jamshedpur-832110, Jharkhand (INDIA)
E-mail : al_hera_library@sify.com, Mob. : 09334634662, 09204000609

## APPEAL

An academic library named **"AL-HERA LIBRARY"** was established in 2004 to uplift the education standard in the downtrodden people of the society. Now it is running under **"SABIHA WELFARE TRUST" Regn. no. 5418/4603, PAN No. AAITS2377J.** This is the only academic library in approx. 8 lakhs populated area, it works progressively and achieving its goal day by day. It was started with 75 books only & after 6 consecutive years it reaches 4656 books. But still it requires your support to fulfill the student's requirements. Apart from that library also works for carrier counseling, AIDS awareness, blood donation, quiz contest etc.

The president of the library received **CMD** (chairman and managing director) award 2006 in the category of **"CORPORATE RESPONSIBILITY"** from Cummins in India held at Pune. Visit **(orkut.com>search>type al hera library).**

Here is the kind request to all of you that please bring your hand forward for this noble cause to serve the students for their glorious future and make our country developed and strong through education.

You are requested to send your donations to :
A/C name : SABIHA WELFARE TRUST
Bank name : STATE BANK OF INDIA
Branch : Bistupur, Jamshedpur, Jharkhand
A/C no. : 30573132872

May Allah give you returns, Inshallah, Ameen

PRESIDENT
**MD. SHAHNAWAZ QUAMAR**

जिसका इनसे वादा किया जाता रहा है ।'' (70:41-44)

''जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जाएगी, और (इसी प्रकार) आकाश भी और सबके सब उस अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएंगे जो अकेला और प्रभुत्वशाली है ।'' (14:48)

**मृत्यु और पारलौकिक जीवन के बीच का अंतराल**

मृत्यु और परलोक के बीच के अंतराल में आत्मा किस स्थिति में होगी ? यह प्रश्न भी ऐसा है जिस पर थोड़ा विचार कर लेना विषयांतर न होगा । शरीर त्यागने के पश्चात भी आत्मा जीवित रहती है । शरीर छूटने के बाद वह मर नहीं जाती । कुरआन से इसी बात की पुष्टि होती है । बुद्धि भी यह कहती है कि मृत्यु के पश्चात आत्मा मरती नहीं । यदि हम वैज्ञानिक ढंग से विचार करें, तो हमें इसी बात का समर्थन होगा कि शरीर का त्यागना आत्मा की मृत्यु नहीं है । यह मृत्यु तो केवल शरीर पर घटित होती है । और मृत्यु से शरीर के भौतिक तत्व नष्ट नहीं होते । वे केवल प्राणहीन हो जाते हैं । मानव-आत्मा को भले ही हम पूर्ण रूप से न समझ पाएं और वह हमारे लिए एक रहस्य हो, किन्तु चेतना शक्ति से सभी परिचित हैं । यह चेतना आत्मा का निकटतम रूप है । मरने के पश्चात भी यह चेतना नहीं मरती । यह चेतना शेष रहती है । मनुष्य का व्यक्तित्व शेष रहता है । इसलिए कि व्यक्तित्व का अंतिम निवास स्थान चेतना ही है । चेतना के बिना किसी व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती । इसलिए उसके विनष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता । जब मानव का व्यक्तित्व और चेतना मृत्यु के बाद भी शेष रहती है, तो पुनः उसे किसी देह या शरीर से जोड़ना असंभव कैसे कहा जा सकता है ।

इस जगत में सर्वत्र यह नियम दिखाई देता है कि यहां कोई चीज़ बिल्कुल मिट नहीं जाती, केवल उसका रूप बदल जाता है । पदार्थ प्रमाण में और प्रमाणु ऊर्जा में भले ही परिवर्तित हो जाए, किन्तु वह बिल्कुल ही अस्तित्वहीन नहीं हो जाता । फिर चेतना के संबंध में यह नियम भंग कैसे हो जाएगा । क्या हमारी चेतना जगत में पायी जाने वाली एक वास्तविकता नहीं है । आख़िर यह कैसे मान लिया जाए कि हमारी भावनाएं और हमारी चेतना मृत्यु के पश्चात शेष न रह सकेगी । क्या ऐसा इसलिए मान लिया जाए कि मृत्यु के पश्चात मरने वाले की चेतना या व्यक्तित्व का अनुभव हमें नहीं होता । लेकिन उसका आभासित न होना इस बात का प्रमाण नहीं कि उसका सिरे से कोई अस्तित्व ही नहीं रहता । सच्ची बात तो यह है कि किसी की आत्मा या चेतना का तो उसके जीवनकाल में भी हमें प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हो पाता । उसका अनुभव हमें बाह्य लक्षणों द्वारा ही होता है । चेतना कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसका परीक्षण नली में परीक्षण किया जा सके ।

चेतना या मानव व्यक्तित्व एक तथ्य है कोई काल्पनिक वस्तु नहीं । मानव जाति की सभ्यताओं और संस्कृति में इसी चेतना का प्रदर्शन हुआ है । आधुनिक संसार में जो विज्ञान के चमत्कार वायुयान, राकेट, ट्रेन, रेडियो, टेलीविज़न आदि के रूप में दिखाई देते हैं क्या इसमें मानव चेतना के योगदान को अस्वीकार करने का कोई साहस कर सकता है । चेतना एक वास्तविकता है और अत्यंत सुदृढ़ वास्तविकता । यह एक ऐसा यथ्य है जिसे वैज्ञानिक व्यक्तियों ने भी स्वीकार किया है । सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक मेक्स प्लेनेक ने कहा है : ''मैं चेतना को आधार समझता हूं । पदार्थ चेतनाजन्य है । हम चेतना से पीछे नहीं जा सकते ।''

# महाप्रलय

यही प्रलय है महाप्रलय है
विचलित सारा जीवन लय है
तंत्र-मंत्र, जादू और मूठ
अब वो सिद्ध हुए हैं झूठ
हंसली में फंसली है जान,
नहीं किया कुछ उसका ध्यान
तावीज़ों का करते शोर
नहीं चला कुछ उनका ज़ोर
मनुज भटकता चारों ओर,
कहां मिलेगी, उसको ठोर
उखड़ गये, झाड़ और झंखाड़
वायु में उड़ रहे पहाड़
पूछ रहा है पालनहार,
नहीं किया क्यों सोच-विचार
त्राहि-त्राहि का विकट समय है
यही प्रलय है, महाप्रलय है ।

**इकराम राजस्थानी**
संजय नगर, हाउसिंगबोर्ड,
शास्त्रीनगर, जयपुर (राज०)

# अनाथ लड़कों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN BOYS

## यतीमख़ाना इस्लामिया ( गया )



### एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

## यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

**नोट :** यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

**अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM,**

**UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)**

**.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

**.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....**

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

स्क्रोडिंजर को भी कहना पड़ा है : ''चेतना को कभी भौतिकवाद की परिभाषा में नहीं समझाया जा सकता, क्योंकि चेतना की वास्तविकता मौलिक एवं आधारभूत है।''

उन्नीसवीं शताब्दी में भौतिकवादी वैज्ञानिक दावा करते थे कि चेतना वास्तव में पदार्थ की पैदावार है किन्तु अब बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक कह रहे हैं कि चेतना पदार्थ की पैदावार नहीं बल्कि पदार्थ स्वयं चेतना की पैदावार है। जेम्ज़ जींस ने कहा है : ''चेतना की मौलिक वास्तविकता है और भौतिक जगत का आविर्भाव उसी से हुआ है।''

हक्सले ने अपनी पुस्तक मींस एंड इन्ड्स में प्रोफ़ेसर ब्रोड के विचार को व्यक्त करते हुए लिखा है :

''यह बात माननी पड़ेगी कि मानव आत्मा का मनुष्य के देह से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और वह शारीरिक जीवन की दशाओं एवं नियमों की अधीन नहीं है।''

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक एफ॰ डब्ल्यू॰ बेलिस ने निष्कर्ष रूप में कहा है : ''मनुष्य मन के साथ शरीर नहीं है। वह शरीर के द्वारा कार्य संपन्न करने वाला मन है। शरीर तो स्वयं मानसिक कर्मों का परिणाम है, मन के द्वारा गठित हुआ है और मन के द्वारा परिवर्तित होता है।''

इन उद्धरणों से अनुमान किया जा सकता है कि चेतना पदार्थ की अपेक्षा गौण या अमौलिक नहीं है कि हमें यह भ्रम हो कि किसी के देहांत पश्चात उसके शरीर के भौतिक तत्व तो शेष रहते हैं, किन्तु उसकी चेतना का कोई अस्तित्व शेष नहीं रहता। जब चेतना भौतिक वस्तुओं से कहीं अधिक सुदृढ़ और मौलिक है फिर यह कैसे संभव हो सकता है कि मृत्यु के बाद भौतिक शरीर के अंश तो-बाक़ी रहें और चेतना का कोई अस्तित्व शेष न रहे।

चेतना की मौलिकता और उसके बुनियादी होने का अंदाज़ा आप इससे करें कि आज के विचारक और वैज्ञानिक तो भौतिक जगत की भी व्याख्या चेतना या ख़्याल से कर रहे हैं। पॉनिकर और डिस्कार्टिस आदि के मतानुसार किसी वस्तु के अस्तित्व का अर्थ है मात्र किसी के ख़्याल में पाया जाना। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक Arther Eddington के विचार में चित्त हमारे अनुभव की सर्वप्रथम और सबसे प्रत्यक्ष वस्तु है। इसके अलावा जो कुछ भी है वह मात्र निष्कर्षण और कल्पना है।

James Jeans के विचार में ब्रह्माण्ड एक महान सृष्टिकर्ता के चित्त (Mind) की रचना ही नहीं, बल्कि वास्तव में यह नाम है उस चित्त की मात्र कल्पनाओं और विचार का। समय की तरह स्थान को भी सापेक्ष समझा जाने लगा है। कुछ विचारकों का कहना है कि स्पेस केवल अंतस (Mind) में ही होता है, उसका कोई बाह्य अस्तित्व नहीं है। कुछ विचारक स्पेस की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि स्पेस अनुभूति संबंधी तत्व है। इसके बिना अनुभूति नहीं होती। अनुभूति से भिन्न या अलग इसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता।

सारांश यह कि चेतना जगत की कोई उपेक्षित वस्तु कदापि नहीं है, बल्कि चेतना ही जगत का आधारभूत स्तंभ है। अत: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह समझ में आने की बात नहीं है कि जगत की दूसरी वस्तुओं का अस्तित्व तो नष्ट न हो और चेतना अपना अस्तित्व खो बैठे।

मृत्यु के पश्चात आत्मा रहती है या नहीं, इस संबंध में लोगों के कुछ अनुभव भी हैं जिनसे इसका पता चलता है कि मृत्यु के बाद भी आत्मा जीवित रहती है। इस प्रकार अब मृत्यु के बाद या शरीर के बिना आत्मा के अस्तित्व का पाया जाना अवैज्ञानिक बात नहीं रही। इस सिलसिले में आत्मिक अनुसंधान के विवरण अत्यंत अद्‌भुत और आश्चर्यजनक हैं।

क़ुरआन से भी इसी बात की पुष्टि होती है कि शरीर के मरने के पश्चात आत्मा जीवित रहती है और मनुष्य अपने व्यक्तित्व के साथ बाक़ी रहता है। उदाहरणार्थ क़ुरआन के कुछ उद्धरणों का अवलोकन करें : ''जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे जब फ़रिश्तों ने उन (के प्राण) को ग्रस्त किया, तो पूछा : तुम किस दशा में पड़े रहे ? उन्होंने क़हा : हम धरती में विवश थे। कहा : क्या ईश्वर की धरती विशाल न थी कि तुम उस में कहीं उत्प्रवास कर जाते ? यही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम (नरक) है और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।'' (4:97)

''और फ़िरऔन को बुरी यातना ने आ घेरा। आग है जिसके सामने वे प्रात:काल और संध्या को पेश किये जाते हैं और जिस दिन वह घड़ी (क़ियामत) क़ायम होगी (कहा जाएगा) : फ़िरऔनियों को कठोर यातना में प्रविष्ट करो।'' (40:45-46)

इन आयतों से स्पष्ट होता है कि मरने के बाद भी आत्मा रहती है और मनुष्य की चेतना शक्ति काम करती है रहती है।

# क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539




किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



## जाफ़रानी तेल®

## गैस्टिक के दर्द में?

## क़ब्ज़ ट्रोजन

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।




**Qadri Dawakhana**
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957,
RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

# इस्लामी सभ्यता की विशेषताएं

■ मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई

कुछ विद्वानों ने सभ्यता की परिभाषा यह की है : 'सभ्यता एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो इन्सान को सांस्कृतिक उद्देश्यों की की प्राप्ति में ज़्यादा से ज़्यादा मदद देती है ।' सभ्यता के मौलिक तत्व चार होते हैं : भौतिक व आर्थिक संसाधन, राजनैतिक तंत्र, शिष्टाचार से संबंधित नियम और मान्यताएं तथा ज्ञान-विज्ञान व कला का स्थायित्व । किसी सभ्यता के परवान चढ़ने और संगठित होने के लिए कुछ भौगोलिक, आर्थिक और मनौवैज्ञानिक तत्वों का पाया जाना ज़रूरी है । उदाहरण के लिए भाषा, दीन-धर्म, शिक्षा और प्रशिक्षण ।

सभ्यता का इतिहास उस समय से शुरू होता है जब से इन्सान ने इस ज़मीन पर सुकून व स्थायित्व प्राप्त किया है । सभ्यता की कड़ियां निरंतर एक-दूसरी से जुड़ी हुई हैं, जिनको हर क़ौम आने वाली क़ौम की ओर परिवर्तित करती चली आ रही है । शायद कोई क़ौम भी ऐसी नहीं गुज़री, जिसने ऐतिहासिक सभ्यताओं के कथानकों में कुछ न कुछ पृष्ठों की वृद्धि न की हो । अलबत्ता वह चीज़ जो एक सभ्यता को दूसरी सभ्यता से उच्चता व प्रधानता दिलाती है, वह उन आधारों का स्थायित्व व दृढ़ता है, जिन पर उस सभ्यता का भवन खड़ा होता है, तथा वे प्रभाव और गुण हैं जो उससे पूरी मानवता को मिलते हैं । जो सभ्यता अपने मिशन और सन्देश में जितनी ज़्यादा उच्च आदर्शों की पोषक और सार्वभौमिकता की परिचायक होगी, जितनी ज़्यादा इन्सान-दोस्त और अपने सिद्धांतों में जितनी ज़्यादा हक़ीक़त पसन्द होगी, उतनी ही ज़्यादा वह इतिहास में अमर और आदरणीय मानी जाएगी ।

हमारी इस्लामी सभ्यता भी इन्सानी सभ्यताओं के सिलसिले की एक कड़ी है । इससे पहले भी अनेक सभ्यताएं गुज़र चुकी हैं और इसके बाद भी आती रहेंगी । इस्लामी सभ्यता के जन्म लेने के भी कुछ कारण थे, कुछ तत्व थे, जिन्होंने इसको चमत्कारपूर्ण महानता के शिखर पर पहुंचाया । और इन्सानी उन्नति के इतिहास में इस सभ्यता ने जो भव्य भूमिका अदा की है, आस्थाओं और विचारों, ज्ञान-विज्ञान और कला तथा राजनीति और राज्य-शासन के क्षेत्र में इसने जो अविस्मरणीय योगदान दिया है, उनकी भी कुछ चर्चा कर लें । अत: वे प्रमुख और स्पष्ट विशेषताएं, जो इस्लामी सभ्यता के इतिहास का अध्ययन करने वालों को अपनी ओर आकृष्ट करती हैं निम्नलिखित हैं–

इस्लामी सभ्यता की पहली विशेषता वह है कि वह एकेश्वरवाद (तौहीद) के अक़ीदे की बुनियाद पर क़ायम हुई है । यह वह एकमात्र सभ्यता है, जो 'एक अल्लाह की आज्ञाकारिता' की ओर मानवता की दावत देती हैं । वह अल्लाह जिसकी बादशाही और हुकूमत में कोई उसका भागीदार नहीं है । केवल उसकी की इबादत की जानी चाहिए और उसी को सब आशाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति का एकमात्र स्रोत मानना चाहिए–"इय-या-क-न अ्-बु-दु व इय्या-क-नस्त अ़ीन"। वही है जो इज़्ज़त व ज़िल्लत देता है, सारी बख़्शिशें व अनुकम्पाएं उसी के हाथ में हैं । आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो ।

एकेश्वरवाद के अभिप्राय और उसके तक़ाज़ों को दिल व दिमाग़ से रचा-बसा देने का ही चमत्कार था, जिसने इन्सान के मान-सम्मान को ऊंचा किया और जनता को हाकिमों और बादशाहों के आतंक व नोच-खसोट से आज़ाद कराया । 'राजा' और 'जनता' के बीच संबंधों की सही परिवेश दिया और सबकी निगाहों को एकमात्र अल्लाह की ओर फेर दिया, जो सारी सृष्टि का स्रष्टा और सारे जहां का पालनहार व मालिक है ।

इस आस्था का इस्लामी सभ्यता पर इतना ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा कि वह सारी पिछली व अगली सभ्यताओं से अलग और उच्च हो गयी और अपनी सारी आस्थाओं, व्यवस्थाओं में और ज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र में आगे निकल गयी । इस्लामी सभ्यता की दूसरी विशेषता यह है कि वह अपनी रुचि और रुझान के कारण पूरी मानवता पर हावी है और अपने पैग़ाम और मिशन के एतिबार से सर्वव्यापी व सार्वलौकिक है । अत: क़ुरआन में कहा गया है–"ऐ लोगो ! हमने तुमको पैदा किया है एक मर्द और एक औरत से, और बनाया है तुमको गिरोह और क़बीले ताकि तुम एक-दूसरे को पहचान सको । वरना अल्लाह की नज़र

# मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

## जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीरं ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

**अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।**

—: भेजने का पता :—

**जामिया मिस्बाहुल उलूम**

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

**जामिया का बैंक खाता नं०**

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

में तुम में सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाला) है ।'' (हुजुरात : 13)

क़ुरआन मजीद के इस ऐलान ने विश्व मानवता के एकत्व की बुनियाद न्याय, परोपकार और ईशभय पर रख दी है अत: इसकी सभ्यता की लड़ी में हर उस उम्मत और क़ौम के विवेकी व ज़हीन लोग शामिल होते चले गये हैं, जिन पर इस्लाम ने अपने प्रभुत्व का झंडा लहराया । यही कारण है कि इस्लाम को छोड़कर दुनिया की सारी सभ्यताएं केवल एक ही क्षेत्र, क़ौम या नस्ल के नाम पर लोगों पर गर्व कर सकती है, जबकि इस्लामी सभ्यता उन सारी क़ौमों व क़बीलों के सपूतों पर गर्व करती है, जिन्होंने मिल-जुलकर सभ्यता के इस विशाल भवन के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया । अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ई, अहमद, अलख़लील (गेलीलियो), अलकिन्दी, अलफ़र्रा, इब्न-रुश्द, (एवेरोस) अबू-सीना (एबेसीनिया) और उनकी तरह के हज़ारों विद्वान विभिन्न भाषाओं क्षेत्रों व नस्लों से संबंध रखने के बावजूद इस्लाम के ही सुपुत्र थे, जिनके माध्यम से इस्लामी सभ्यता ने मानवता के सामने उच्च विचारधारा के बेहतरीन फल प्रस्तुत किये हैं ।

इस्लामी सभ्यता की तीसरी विशेषता यह है कि उसने अपने पूरे जीवन तंत्र में और अपनी सारी व्यवस्थाओं व कार्यकलापों में अख़्लाक़ी (नैतिक) सिद्धांतों को सर्वोपरि स्थान दिया है । इन सिद्धांतों को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया और उनको शासकों, जमाअतों या लोगों के आर्थिक लाभों का साधन कभी नहीं बनाया । शासन, प्रशासन, सियासत, विधि व्यवस्था, युद्ध व शांति, अर्थव्यवस्था ज्ञान-विज्ञान व कला और पारिवारिक व सामाजिक मामलों में, संक्षिप्त यह कि जीवन के सभी क्षेत्रों में इन नैतिक सिद्धांतों को सर्वोपरि रखा । वास्तविकता यह है कि इस मामले में इस्लामी सभ्यता के इतिहास में जैसे महान आदर्श हमें देखने को मिलते हैं और इस्लाम के सपूत जिसे चरम सीमा तक पहुंचे हैं, उसकी मिसाल संसार की किसी अन्य सभ्यता में नहीं मिलती । इस क्षेत्र में इस्लामी सभ्यता ने इतिहास के पृष्ठों को जिन सुनहरी गाथाओं से सजाया है वे अत्यंत चमत्कारपूर्ण हैं । वास्तव में इस्लामी सभ्यता वह एक मात्र सभ्यता है, जिसने मानवता को असंदिग्ध सफ़लता की गारंटी दी और उसे असफलता व दुर्भाग्य के काले सांपों से बचाया ।

इस्लामी सभ्यता की चौथी विशेषता यह है कि यह सभ्यता ज्ञान के सच्चे सिद्धांतों पर ईमान रखती है और सबसे ज़्यादा पवित्र सिद्धांतों व अक़ीदों को अपना मर्कज़ क़रार देती है । इस सभ्यता ने मानव मन और मानव बुद्धि, दोनों को एक साथ संबोधित किया है तथा दिल व दिमाग़ दोनों को एक साथ प्रेरित किया है । इस मामले में भी इस्लामी सभ्यता दुनिया की सभी दूसरी सभ्यताओं से प्रमुख व विशिष्ट है । इस विशेषता में भी कोई सभ्यता उसकी शरीक नहीं है ।

फिर इस्लामी सभ्यता की एक और विशेषता है, वह यह कि इसने हक़ और इन्साफ़, औचित्य और निष्कलंक न्याय के आधार पर एक ऐसी राज्य व्यवस्था का निर्माण किया है, जो पूरी तरह दीन व अक़ीदे पर इस विशेषता के साथ केन्द्रित हैं कि वह न आध्यात्मिकता की उन्नति में कोई बाधा बनती है और न राजतंत्र के चलाने में किसी विपरीत प्रभाव का शिकार होती है और न सभ्यता के फलने-फूलने में कोई रुकावट बनती है । बल्कि स्थिति यह है कि धर्म ही वह केन्द्रीय तत्व है, जो इस राज्य की उन्नति में सबसे प्रमुख भूमिका अदा करता है । बग़दाद, दमिश्क़, क़ाहिरा, क़रतबा और ग़रनाता की मस्जिदों के दरों व दीवारों से ज्ञान की जो ज्योति फूटी थी, उसने सारे संसार को रोशन कर दिया था । इस्लामी सभ्यता इतिहास की वह मात्र


Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
Hosiery Centre
Wholeseller
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G.)

सभ्यता है जो धर्म को सियासत से अलग नहीं करती । इसके बावजूद इन दोनों के समन्वय से उन ख़राबियों में से कोई ख़राबी पैदा नहीं हुई, जिनसे यूरोप मध्यकाल में दो-चार हुआ था । इसका कारण यह है कि इस्लामी व्यवस्था में शासन शासक के हितोपार्जन के लिए नहीं होता, बल्कि हक़ और इन्साफ़ क़ायम करने के लिए होता है । निस्संदेह राज्य का प्रमुख मुसलमानों का ख़लीफ़ा, उनका हाकिम व सर्वोच्च नेता (अमीर) है, लेकिन विधिनिर्माण शरीअत के विद्वानों के हाथ में है । क्या राजा और क्या प्रजा, क्या विद्वान और क्या निरक्षर, क़ानून के सामने सब बराबर हैं । कोई छूट का हक़दार न ज़्यादती का भागीदार । बस जो भी बड़ाई है वह ईशभय और जनसेवा पर आधारित है ।

फ़ातिमा नामी एक स्त्री चोरी के अपराध में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की अदालत में लायी जाती है, अपराध साबित होता है, तौ सज़ा घटाने की सिफ़ारिश की जाती है । इस पर नबी (सल्ल०) जो सरासर दया व रहमत थे क्रोधित हो उठे और फ़रमाया, "अगर (इसकी जगह) फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद (सल्ल०) भी चोरी करती तो मैं उसके भी हाथ काट डालता ।" (बुख़ारी व मुस्लिम) एक बार आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सारी मख़्लूक़ (सृष्टि) अल्लाह का कुटुम्ब है, अत: अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो अल्लाह के कुटुम्ब को ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाए ।" यह है वह धर्म जिस पर हमारी सभ्यता स्थापित हुई । इसमें किसी शासक, किसी ज्ञानी, किसी संत, किसी ख़ानदानी या दौलत मंद को कोई विशेषता, कोई उच्चता प्राप्त नहीं है । क़ुरआन रसूल (सल्ल०) को निर्देश देता है, "कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक इन्सान हूं ।"

(कह्फ़ : 110)

इस्लामी सभ्यता की पांचवीं विशेषता जो उल्लेखनीय हैं, वह है इसकी विस्मयकारी धार्मिक सहिष्णुता है । यह एक ऐसी विशेषता है जो अन्य किसी ऐसी सभ्यता में नहीं पायी जाती, जो धार्मिक बुनियादों पर आधारित हो । यह तो संभव है कि जो किसी धर्म पर और ख़ुदा पर ईमान न रखता हो, वह सारे धर्मों को एक ही नज़र से देखें और उनके अनुयायियों से एक जैसा व्यवहार करें, लेकिन किसी भी धर्म का जो अनुयायी यह ईमान रखता हो कि उसका धर्म ही सही है, उसका अक़ीदा ही सच्चा और सही है और फिर उसे तलवार उठाने, मुल्क जीतने और शासन करने और अदालत की कुर्सी पर बैठने का मौक़ा भी मिल जाए, लेकिन फिर भी उसका धर्म व अक़ीदा उसे इस बात की इजाज़त न दे कि वह शासन में धांधली और ज़ुल्म से काम ले और अदालत व इन्साफ़ के तरीक़ों से मुंह मोड़ ले और लोगों को अपना धर्म अपनाने पर मजबूर करें, तो ऐसा आदमी इतिहास की सबसे विचित्र मख़लूक़ समझा जाएगा ।

अत: यह स्थिति कितनी अजीब व बेमिसाल होगी कि इतिहास में एक पूरी सभ्यता ऐसी मौजूद हो, जो धार्मिक बुनियादों पर क़ायम हो और उन्हीं सिद्धांतों पर उसका निर्माण व विकास हुआ हो, लेकिन इसके बावजूद उसने मानव इतिहास में सबसे ज़्यादा रवादारी, सहिष्णुता, संयम, इन्साफ़ व इन्सानियत का रवैया अपनाया है ? यह कारनामा हमारी इस्लामी सभ्यता ने अंजाम दिया है । हमारे लिए यही जान लेना काफ़ी है कि इस्लामी सभ्यता इस मामले में एकमात्र सभ्यता है ।


प्रो० मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

| | | |
|---|---|---|
| अम्बिकापुर से बिलासपुर | रात्रि | 23:20 |
| अम्बिकापुर से रायपुर | प्रात: | 03:00 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 21:30 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 22:25 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 22:30 |
| मननगढ़ से डाल्टेनगंज | रात्रि | 19:10 |
| अम्बिकापुर से मननगढ़ | संध्या | 05:00 |
| अम्बिकापुर से चीरमीरी | प्रात: | 06:30 |
| अम्बिकापुर से मननगढ़ | संध्या | 16:10 |
| रायगढ़ से डाल्टेनगंज | रात्रि | 21:40 |

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

# नमाज़

■ अफ़ज़ल हुसैन

मनुष्य को नमाज़ इस योग्य बनाती है कि उसका सम्पूर्ण जीवन सचमुच ईश्वर के आज्ञापालन एवं सेवा में व्यतीत हो सके । परन्तु 'नमाज़' का पूर्ण लाभ तभी हो सकता है, जब आपको यह ज्ञात हो, कि आप जो कुछ नमाज़ में पढ़ते हैं, उसका अर्थ क्या है ? फिर जो कुछ आप पढ़ें सोच-समझकर पढ़ें और यह जानते हुए पढ़ें कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह ईश्वर से कह रहे हैं ।

जो व्यक्ति इस भांति नमाज़ पढ़ता है, उसके जीवन की दिशा अतिशीघ्र परिवर्तित हो जाती है, उसका सम्पूर्ण जीवन इस बात का प्रमाण हो जाता है कि वह सच्चा मुसलमान है । उसकी बुरी प्रवृतियां दूर होने लगती है, उसके चरित्र में सुधार होने लगता हे तथा वह कार्य और वचन का सच्चा हो जाता है, बुरी बातों से दूर रहता है, कलह एवं विग्रह के समीप नहीं जाता । तात्पर्य यह है कि उसके सम्पूर्ण जीवन में भलाइयां बढ़ने और बुराइयां घटने लगती हैं।

समझकर 'नमाज़ पढ़ने से जो लाभ होते हैं, वे अकारण यूं ही नहीं हो जाते । आप स्वयं विचार करें तो सरलता से समझ में आ जाएगा कि जब कोई व्यक्ति समझकर नमाज़ पढ़ेगा, तो उसमें परिवर्तन अवश्य होंगे ।

सोचिए तो सही, आप प्रभात के समय उठे, शुद्ध एवं पवित्र होकर अपने स्वामी के सम्मुख करबद्ध होकर उपस्थित हुए, शिष्टाचारपूर्वक झुके और अत्यंत अधीनतापूर्वक मस्तक पृथ्वी पर रख दिया, उसकी अधीनता एवं दासता को वास्तविक रूप में अंगीकृत किया, उससे सहायता एवं उपदेश की प्रार्थना की और उस प्रतिज्ञा को फिर दुहरा लिया जो आपने मुसलमान होते समय की थी, अर्थात यह कि आपका स्वामी एवं शासक केवल परमेश्वर है और जीवन भर आप उसके आज्ञाकारी रहेंगे ।

बार-बार उससे प्रार्थना की कि हे ईश्वर, ऐसे कार्य करने की शक्ति एवं सामर्थ्य दे, जिनसे तू प्रसन्न होता है । उसके सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सत्य सन्देष्टा होने में साक्षी हुए और उस दिन का भी स्मरण कर लिया, जब प्रत्येक व्यक्ति उसके न्यायालय में उपस्थित किया जाएगा और अपने सत्कर्मों एवं दुष्कर्मों का प्रतिदान पाएगा ।

इस भांति आपका दिन प्रारंभ हुआ और आप काम-काज में लग गये । तनिक सोचने की बात है कि जिसका दिन इस भांति आरंभ हुआ, उससे आप यह आशा कैसे कर सकते हैं कि ईश्वरीय इच्छा के विपरीत दूसरों की दासता में वह अपना समय व्यतीत करेगा । दूसरों से मनोरथ-पूर्ति की आशा करेगा, उन्हें स्वामी और आज्ञादाता समझेगा, तथा उनको विपत्तिनिवारक, सुखदायी और सहायक समझकर उनसे सहायता की याचना करेगा, कृत्य एवं अकृत्य का विचार छोड़कर जीविकोपार्जन करेगा, किसी को अधिकार से वंचित करेगा, दुस्संकल्पों असदुपायों से दूसरों की सम्पत्ति हस्तगत करेगा, अत्याचारी एवं अशांतिप्रिय होगा, घृणित एवं दूषित कृत्यों में भाग लेगा तथा ईश्वर निर्निष्ट प्रकार का परित्याग करके किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा निर्दिष्ट पद्धति के अनुसार जीवन-यापन करेगा ? प्रत्यक्ष है कि ऐसा व्यक्ति इनमें से कोई कार्य न करेगा ।

कुछ घंटों तक आप कार्य में व्यस्त रहे और पुनः कुछ समय के लिए आप उसी के सम्मुख उपस्थित हो गये और प्रातःकाल से अब तक यदि कोई भूल हो गयी, तो उसकी क्षमा चाही और भविष्य के लिए फिर प्रतिज्ञा को दोहराया । अपने विश्वास को नवजीवन देकर पुनः आप सांसारिक कार्यों की ओर लौट गये । कुछ घंटों के पश्चात पुनः उस पाठ की आवृत्ति की गयी । इस प्रकार आपका दिन समाप्त हुआ और रात्रि का आगमन हुआ । रात्रि के आते ही आपने पुनः अपने विश्वास को नवीन किया और अन्तिम बार सोने से पूर्व अपने स्वामी एवं शासक से वही प्रतिज्ञा की जो प्रातःकाल के समय उठते ही की थी ।


मारूफ़
शू पैलेस
जी०ई० रोड, बस स्टैंड, बी०एम०वाई०
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एम०के० इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786



**B.E.T.**
ENGLISH
HIGHER
PRIMARY
&
HIGH SCHOOL
MANAGED BY
BISMILLAH
EDUCATION
TRUST R
MADINA
NAGAR
BRANCH,
MADINA
NAGAR,
BANGALORE

**BEACON**
BUILDERS

**Architects S. A. Junaidi & Md. Rafi Bangalore**

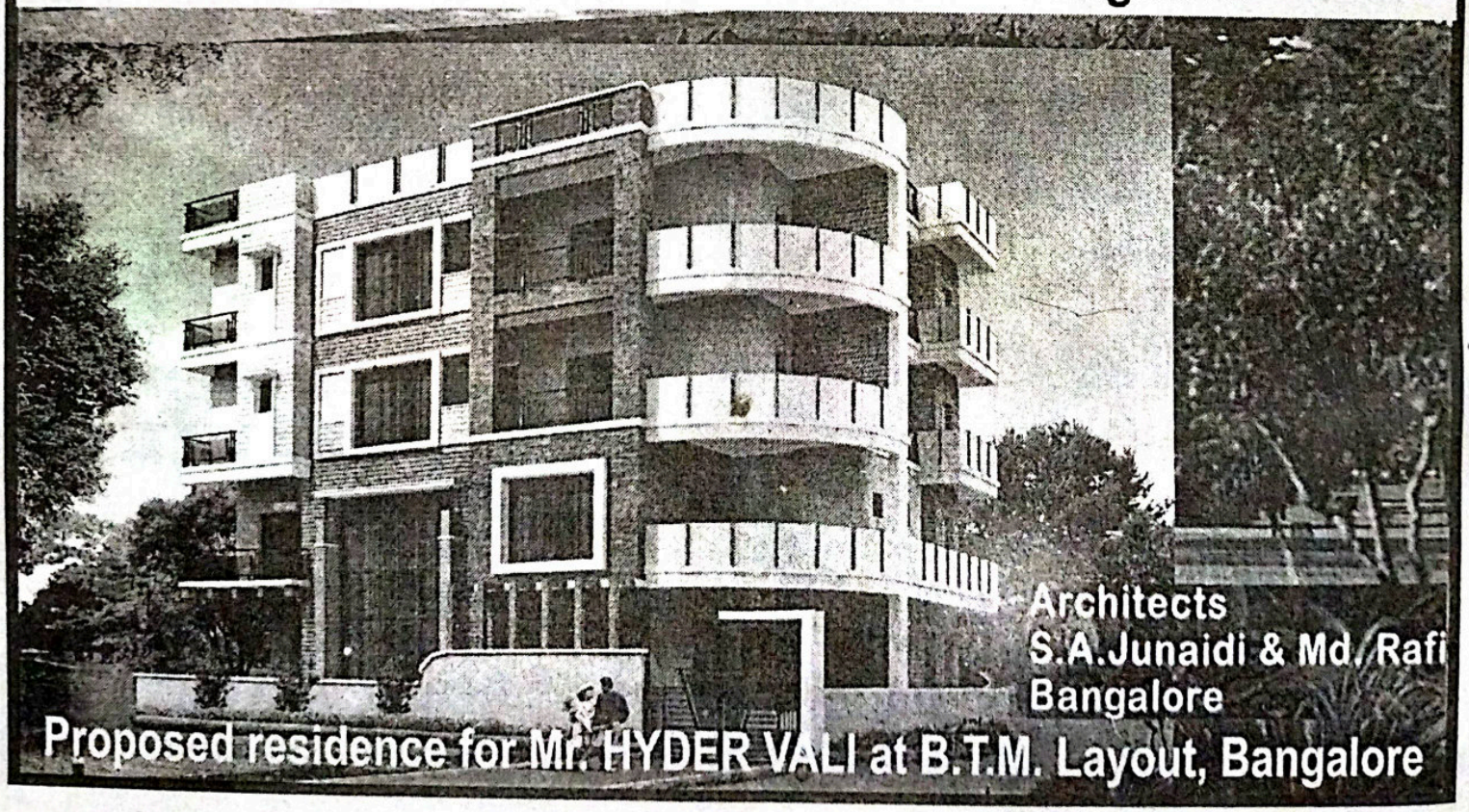


**Proposed residence for Mr. HYDER VALI at B.T.M. Layout, Bangalore**

# गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को ईरोड में हुआ था। उनके पिता श्रीनिवास अय्यंगार एक कपड़े की दुकान में खजांची थे तथा उनकी मां कोमलम्माल एक घरेलू महिला थीं। सन 1888 से 1914 तक वे कुम्बकोणम में रहे। उनका विवाह सन 1901 में हुआ। उस समय रामानुजन 14 वर्ष के थे।

सन 1903 में रामानुजन ने मद्रास विश्वविद्यालय से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। केवल एकमात्र यही डिग्री वह हासिल कर सके तथा इसमें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। वे एफ॰ए॰ की परीक्षा में बैठे किन्तु सफल न हो सकें। इस असफलता का प्रधान कारण यह था कि जब वे सोलह-सत्रह वर्ष के हुए, तब तक गणित के प्रति उनकी लालसा इतनी प्रबल हो गयी थी कि वे किसी अन्य विषय की ओर ध्यान नहीं दे पाते थे और गणित के सिवाय अन्य पर्चों में उत्तीर्ण ही नहीं हो सके।

एम॰ए॰ परीक्षा की असफलता ने उन्हें हताश न होने दिया। 1907 से 11 के दौरान उनका मस्तिष्क गणितीय विषयों में अत्यधिक सक्रिय रहा। उन्होंने सोलह वर्ष की अवस्था तक किसी उच्च स्तर की गणित की कोई पुस्तक भी नहीं देखी थी। केवल एक पुस्तक कुंभकोणम में किसी वृद्ध सज्जन से प्राप्त की थी। वह थी–'शुद्ध तथा व्यावहारिक गणित में प्रारंभिक परिणाम की रूपरेखा।' इस पुस्तक ने गणित के प्रति रामानुजन की छिपी प्रतिभा को जगा दिया।

रामानुजन अपने सभी परिणाम नोट बुक में लिख लिया करते थे। बाइस वर्ष की अवस्था से पूर्व ही उन्होंने तीन नोट बुक गणित के फार्मूलों से भर ली थीं। इस समय ये तीन नोट बुक रामानुजन की प्रसिद्ध रचनाएं मानी जाती हैं, और पिछले सत्तर वर्षों के दौरान जी॰एस॰ हार्डी, जी॰एन॰ वाट्सन तथा एल॰जे॰ रोजर्स जैसे उनके गणितज्ञों के असंख्य शोध पत्रों का आधार रही हैं।

रामानुजन एक अत्यंत निर्धन परिवार में जन्मे थे, इसलिए अपने परिवार की सहायता करने के लिए उनको मजबूर होकर नौकरी की तलाश करनी पड़ी। 1912-13 के दौरान रामानुजन मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के लेखा विभाग में क्लर्क थे। फिर इंडियन मैथमेटिकल सोसायटी के संस्थापक वी॰ रामस्वामी अय्यर तथा सोसायटी के अध्यक्ष आर॰ रामचंद्र राव के प्रयास से उन्हें शोध छात्रवृत्ति मिली, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें शोधकार्य को आगे बढ़ाने का सुअवसर मिला।

● रश्मि शर्मा

## नेक राह पर चलना सीखें

डूब चुका है विसंगतियों
में सामाजिक ताना-बाना
चारों ओर बुराई को ही
सभी चाहते हैं अपनाना

भाषा, धर्म, जाति के ख़ेमे
में बंट चुका समाज यहां
मानव-जीवन में नेकी का
शेष बचा अस्तित्व कहां

महिलाओं के साथ हो रहे
अनाचार अन्याय बड़े,
नारी को हम बेच रहे हैं
बाज़ारों में खड़े-खड़े

बिखर रहा परिवार हमारा
रिश्तों की अहमियत नहीं
ममता जैसी भावनाओं की
झलक मिले अब कहीं-कहीं

ऐसे में 'ईश्वरभय' को हम
जीवन का आधार बनाएं,
शुभ-इच्छा और पवित्रता को
हर कोशिश कर हम अपनाएं

'सत्य-धर्म' की चर्चाओं का
निशि दिन पालन करना सीखें
नैतिकता व सदाचरण की
नेक राह पर चलना सीखें।

● अभिराम सत्यज्ञ 'जयशील'

# भारतीय भाषाओं और हिन्दी के विकास में मुस्लिम योगदान

■ डॉ॰ राज सक्सेना
(खटीमा, उत्तराखंड)

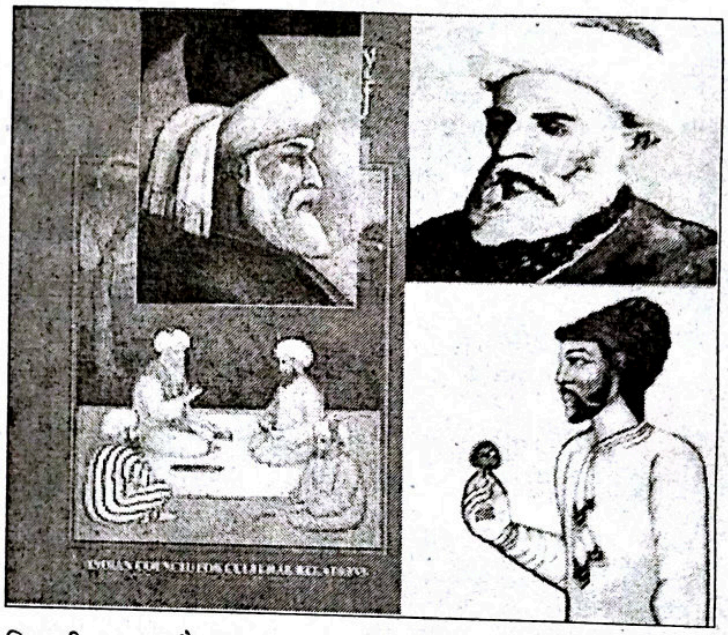

संस्कृत भारतीय भाषाओं के लिए एक विशाल वट वृक्ष के रूप में रही है । इसकी विशाल छत्रछाया में भारत की अनेक स्थानीय भाषाएं अंकुरित और पल्लवित होती रहीं किंतु राज्याश्रय के अभाव में स्थानीय भाषाएं हमेशा दूसरे दर्जे पर ही रहीं । जिस प्रकार बरगद (वट) के वृक्ष की छाया में कोई पौधा उग भले ही जाए, पनप नहीं पाता वही स्थिति संस्कृत की छत्रछाया में स्थानीय भाषाओं की रही । तत्कालीन आभिजात्य वर्ग ने जिसका शासक और शासन पर पूर्ण नियंत्रण था ने मात्र संस्कृत को राजभाषा के रूप में सिंहासनारूढ़ कराकर उस पर अपना एकाधिकार बना लिया । जनसाधारण के लिए उसका पठन-पाठन तक निषेध कर दिया गया । फलस्वरूप राज्य या राष्ट्र के अनेक राज्यों में संस्कृत जानने वाले एक या दो प्रतिशत लोगों का संस्कृत पर वर्चस्व हो गया और वे इसी स्वयं पर आरोपित योग्यता के फलस्वरूप धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक तीनों रूप से जनमानस पर क़ाबिज़ हो गये ।

धार्मिक आख्यानों से लेकर, राजनीतिक कार्यकलापों, न्यायिक निर्णयों और सामाजिक संरचना के जन्म से लेकर मरण तक के ताने-बाने को संस्कृत में समाहित कर इस तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने समाज में वही स्थिति प्राप्त कर ली, जो वर्तमान में दो-ढाई प्रतिशत अंग्रेज़ी जानने वाले लोग बनाए हुए हैं । जिस प्रकार ये लोग अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में नियमित बाधाएं उत्पन्न कर उन्हें मरणासन्न स्थिति तक पहुंचा रहे हैं, उसी प्रकार संस्कृत जानने वाले वर्ग ने स्थानीय किसी भाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में भी पल्लवित नहीं होने दिया ।

वर्ग-संघर्ष के दौर में जनसमर्थन पाकर बौद्ध धर्म विजयी हुआ और राज्याश्रय पाकर प्राकृत व उससे संबंधित भाषाएं आगे बढ़ीं और एक समय तो लगा मानो अपने जन्म स्थान आर्यावर्त से संस्कृत विलुप्त हो जाएगी किन्तु बौद्ध धर्म के समूल नष्टीकरण के उपरांत संस्कृत पुनः धीरे-धीरे वर्चस्व की ओर अग्रसर हो रही थी तभी हिन्दी और स्थानीय अन्य भाषाओं के भाग्य ने पलटा खाया । भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के साथ जनसाधारण से सतत् संपर्क के लिए मुसलमानों को एक सामान्य भाषा की आवश्यकता हुई । संस्कृत दूरूहता और पूर्ववर्ती राजभाषा होने के कारण उनके लिए त्याज्य थी । फ़ारसी या अरबी को एकदम जनपक्ष से जोड़ना संभव था नहीं । राजकाज शासक और शासित के परस्पर संबंधों और एकात्मता पर निर्भर करता था । अतः मुस्लिम शासकों ने स्थानीय भाषाओं और एक सर्वमान्य बोली हिन्दी (रेख़्ता, खड़ी या उर्दू) के रूप में संस्कृत को किनारे कर उनके विकास पर ध्यान दिया ।

हिन्दी या हिन्दवी के जनक अमीर खुसरो ने अपनी

# भारतीय भाषाओं और हिन्दी के विकास को प्रोत्साहन



मसनवी 'नोह सपहर' में जिन स्थानीय भाषाओं को सम्मिलित किया था उनमें थीं–सिंधी, लाहौरी, डोगरी, कश्मीरी, धोर समन्दर, तिलंगी, गुजराती, गोड़ी (गौड़ या लखनौती), मुअब्बरी, बंगाली, अवधी (ब्रजभाषा सहित), देहलवी (हिन्दवी, खड़ी या रेख़्ता) तथा संस्कृत । संस्कृत भाषा को अमीर खुसरो भी अरबी भाषा को छोड़कर सब भाषाओं से श्रेष्ठ भाषा अवगत कराते हैं । ये कुछ तेरह भाषाएं हैं । अगर अपवाद छोड़ दिये जाएं तो यह विभाजन आज भी महत्वपूर्ण विभाजन के रूप में उभरता है ।

यहां महत्वपूर्ण यह है कि ये स्थानीय बोलियां या कहें भाषाएं गंवारू भाषाओं के रूप में जनसाधारण की भाषाएं तो थी किंतु बिखरी-छितरी असाहित्यिक रूप में दूसरे शब्दों में कहें तो देहाती रूप सुन्दरी के रूप में जिसके पास न सुन्दर वस्त्र थे और न कलात्मक गहने । स्थानीय धूल से सराबोर ये भाषाएं हर आठ-दस मील दूर पर बदलते स्वरूप में ज़िंदा तो थीं मगर पूर्णतया छिन्न-भिन्न । संस्कृत अपने सामान्य स्वरूप और जटिल संरचना के कारण स्वीकार्य नहीं थी । अत: उन्होंने स्थानीय भाषाओं, जो जनसाधारण की जनसंपर्क भाषा भी थीं, का दामन पकड़ा और अपनी आवश्यकता के अनुरूप उनमें कुछ शब्द समाहित कर उन्हें राज्याश्रय प्रदान कर दिया । राजयाश्रम प्राप्त होते ही ये स्थानीय बोलियां पनपने लगीं । एक विकसित रूप और सुधरा और सुगठित आकार प्राप्त करने लगी । मुसलमानों ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ नये धंधे प्रारंभ कराये और कुछ धंधों को प्रश्रय दिया । इनके माध्यम से इन भाषाओं ने व्यापकता प्राप्त की ।

यही नहीं मुस्लिम शासकों ने अन्य भाषाओं के साहित्य और ललित कलाओं को उर्दू और अन्य स्थानीय भाषाओं मे पिरोया जिससे उर्दू जो आगे चलकर हिन्दी का प्रारंभिक रूप बनी के साथ-साथ स्थानीय बोलियों और भाषाओं ने साहित्यिक स्वरूप प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया । यद्यपि हिन्दी के विकास में ब्रज भाषा और अवधी का भी पूर्ण योगदान है किन्तु इसके प्रारंभिक स्वरूप के गठन और एक परिपक्व भाषा के रूप में मुस्लिम साहित्यकारों और शासकों का योगदान भी एक अहम स्थान रखता है । हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए ।

स्थानीय भाषाओं में मुस्लिम योगदान के विषय में 'बांगला साहित्य का इतिहास' में दिनेशचन्द्र बी०ए० ने कहा है–"बांगला भाषा के साहित्यिक स्तरीय स्वरूप प्राप्त करने के अनेक कारण हैं । उनमें सबसे प्रमुख कारण मुस्लिमों की बंगाल विजय ही है । अगर हिन्दू राजाओं के वही मुख़्तार, अधिकारी और प्रशासक रहते तो बंगला भाषा को राज दरबार के दर्शन और कामकाज की भाषा के रूप में पदारोहण प्राप्त कर पाना असंभव था । पठानों ने तेरहवीं शताब्दी में बंगाल पर विजय प्राप्त कर ली । उनके सुलतानों ने बंगाली भाषा सीखी और अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के साथ उन पर

# HUDA BUILDERS & DEVELOPERS

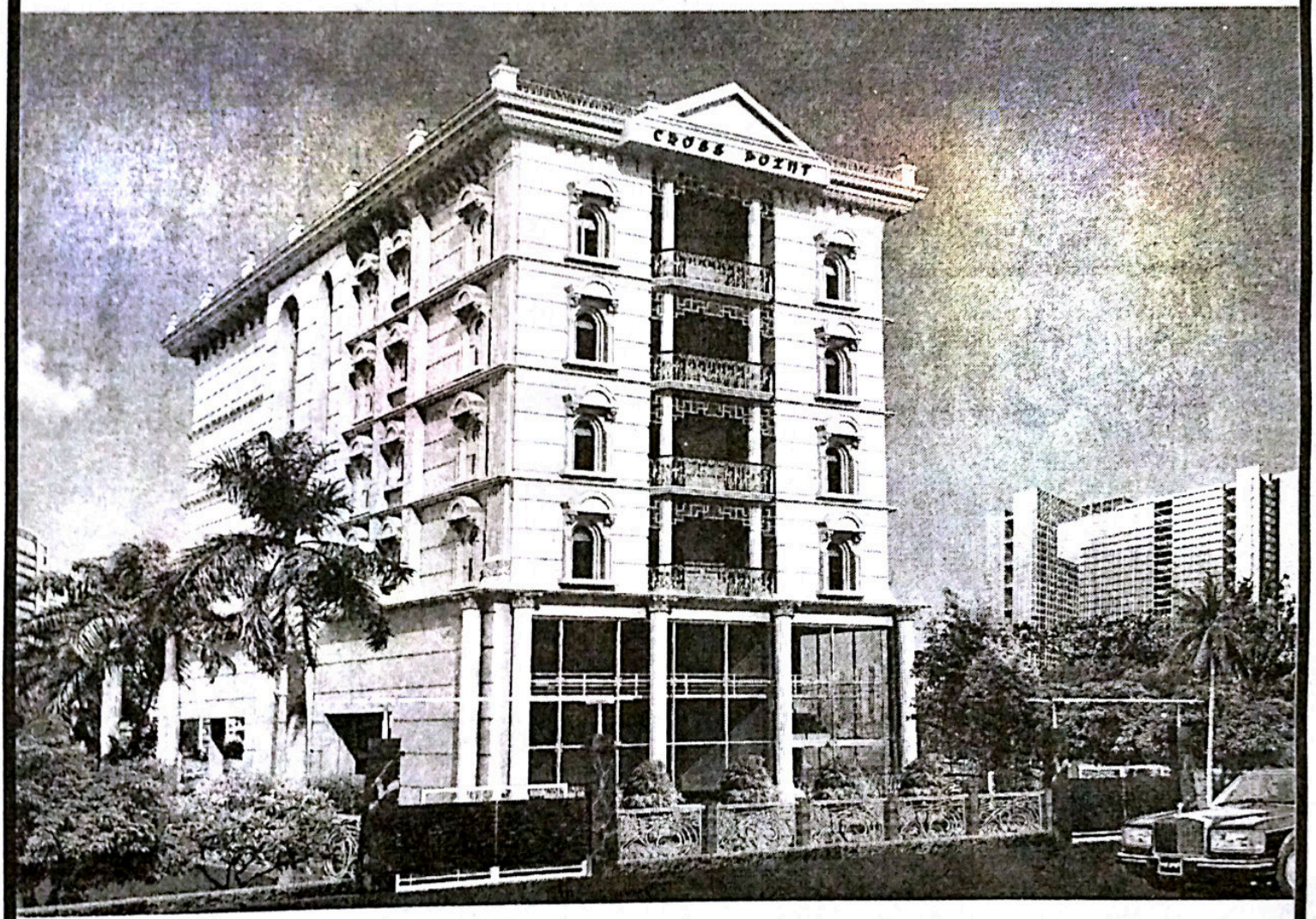


*MD. MUKHTAR AHMED*

**MOBILE NO. : 9820127170**

**385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),**
**Mumbai-400011**

**Tel. No. : 23482660/23482688/23482762**

**Fax : 23484245**

शासन करने के लिए वे आ बसे और घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लिये । जब उन सुल्तानों ने संस्कृत के ग्रंथ प्रसिद्ध महाकाव्यों महाभारत और रामायण के बारे में सुना जो हिन्दुओं के सामाजिक और धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन की संरचना में आश्चर्यजनक और अनोखा असर रखते हैं, तो स्वाभाविक ढंग से उनको शौक़ हुआ कि उन कविताओं के विषय में जानकारी प्राप्त करें । उन्होंने कुछ विद्वानों को बंगला भाषा में उनके अनुवाद का आदेश दिया । इस भाषा को वे अब बोलते और जानते थे । महाभारत का बंगला अनुवाद गौड़ के शासक नासिर शाह की आज्ञा से हुआ था, जिसने पूरे चालीस साल तक बंगाल पर राज्य किया था ।'' इसी प्रकार जिन-जिन राज्यों में मुस्लिम शासन था वह वहां स्थानीय भाषाओं में संस्कृत के अनुवाद की व्यवस्था की । शासन स्थानीय भाषाओं की साहित्यिक अभि-वृद्धि में सहायक हुआ ।

**यहीं नहीं मुस्लिम शासकों ने अन्य भाषाओं के साहित्य और ललित कलाओं को उर्दू और अन्य स्थानीय भाषाओं में पिरोया जिससे उर्दू जो आगे चलकर हिन्दी का प्रारंभिक रूप बनी के साथ-साथ स्थानीय बोलियों और भाषाओं ने साहित्यिक स्वरूप प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया । यद्यपि हिन्दी के विकास में ब्रज भाषा और अवधी का भी पूर्ण योगदान है किन्तु इसके प्रारंभिक स्वरूप के गठन और एक परिपक्व भाषा के रूप में मुस्लिम साहित्यकारों और शासकों का योगदान भी एक अहम स्थान रखता है । हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए ।**

जिस प्रकार मुस्लिम सूफ़ी-संतों और मुस्लिम कवियों ने मुस्लिम सुल्तानों की इच्छा और सहमति से हिन्दी के वर्तमान स्वरूप की आधारशिला भले ही उर्दू लिपि में लिखकर रखी, हिन्दी में सर्वप्रथम बारहमासा लिखने वाले मुस्लिम कवियों में सर्वश्रेष्ठ ख़्वाजा मसऊद सअद सलमान (जिनका हिजरी 515, सन 1121-22 में देहांत हुआ था) की रचनाएं यद्यपि अब तक अप्राप्य हैं, किन्तु उनका बारहमासा जनमानस में आज भी जीवित हैं । इन्होंने फ़ारसी में सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'अय्याम दुवाज देह माहा' की रचना की जो आज भी उपलब्ध । सूफ़ी संतों के माध्यम से सर्वप्रथम देहलवी हिन्दी की नींव पंजाब में रखने के प्रमाण प्राप्त है । फिर दिल्ली और अन्य क्षेत्रों का नाम आता है । इन सूफ़ी-संतों में कई के नाम सामने आते हैं, यथा–शेख़ फ़रीदुद्दीन मसऊद, शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया, अमीर ख़ुसरो, शेख़ शरफ़ुद्दीन, बू अली-कलन्दर पानीपती, जिन्होंने शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया से हिन्दी में काव्यालाप किया है ।

इन्हीं संतों ने भारतीय संगीत के विकास और उन्नति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था । अमीर ख़ुसरो ने तो फ़ारसी और भारतीय संगीत को एकाकार करने का पूर्ण प्रयास किया था । सत्रह रागों के सृजक सुल्तान हुसैन शाह जौनपुरी थे । नायक बेखुश्र ने बिहारी राग नायकी कल्याण और नायकी कान्हड़ा बनाया । इसी प्रकार दरबारी कान्हड़ा मियां तानसेन ने । शेख़ अताउल्लाह उर्फ़ शेख़ रत्न ने संगीत में ऊंचा स्थान प्राप्त किया । इस क्रम में शेख़ बहाउद्दीन बरतावी, इब्राहीम आदिल शाह, मालवा का शासक बाज-बहादुर आदि ने अद्वितीय कार्य किया । मुस्लिम शासकों, मुस्लिम अमीरों और मुस्लिम नौकरशाहों ने भी हिन्दी और स्थानीय भाषाओं को संरक्षण प्रदान करते हुए उनकी समृद्धि के अनेक प्रयास किये ।

नासिरुद्दीन लखनौती बंगला में महाभारत का अनुवाद कराता है । फ़िरोज़ शाह ख़िलजी कई संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी (लिपि उर्दू) में कराता है । कश्मीर का शासक ज़ैनुलआबिदीन जो कई भाषाएं धारा प्रवाह बोलने में सक्षम था । उसने भी महाभारत और राजतरंगिणी का अनुवाद कराया । बंगाल के शासक ग़यासुद्दीन ने विद्यापति को संरक्षण प्रदान किया । हिन्दी और बंगला के संरक्षण के लिए बंगाल के शासक अलाउद्दीन हुसैन शाह सर्वोपरि हैं । उसके

दरबार में उर्दू (हिन्दी) और बंगला के श्रेष्ठ कवियों का जमघट था। कुतुबन ने अपनी रचना 'मेधावती' इसी शासक को समर्पित की थी। उसी की आज्ञा से मालाधर दासू ने जो कलिंग वासी था ने भागवत का बंगला में अनुवाद किया था। इसी शाह के चटगांव के नाज़िम (प्रशासक) सिपहसालार परागल ख़ां की आज्ञा से गौन परमेश्वर ने महाभारत का दूसरा अनुवाद किया। यह ख़ान की मृत्यु के कारण–अधूरा ही रह गया था, किन्तु उसके पुत्र छोटे ख़ां ने जो उसके स्थान पर नियुक्त हुआ इस अनुवाद पर करुणा नन्दी को लगाकर इसे पूर्ण कराया। मलिक मुहम्मद जायसी ने शेरशाह सूरी के लिए 'पद्मावत' लिखी। क़ाज़ी महम्मद गुजराती हिन्दवी के ज़बरदस्त शायर थे उनके रचे कबत (एक प्रकार के भजन) सूफ़ी संतों के मठों और उनकी सभाओं को रंग देते रहे। शेख़ दानियाल हिन्दवी के नवीं शताब्दी में पैदा, उच्चकोटि के कवि थे। वे एक सौ ग्यारह वर्षों तक जीवित रहकर हिन्दवी को तराशते रहे। शेख़ उस्मान ग़ाज़ीपुरी ने प्रेम कहानियों से हिन्दवी को समृद्ध किया। कुतुबन, मलिक मुहम्मद जायसी, जैसे महान रचनाकारों की देन को कौन भुला सकता है। इनकी रचनाओं ने राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी।

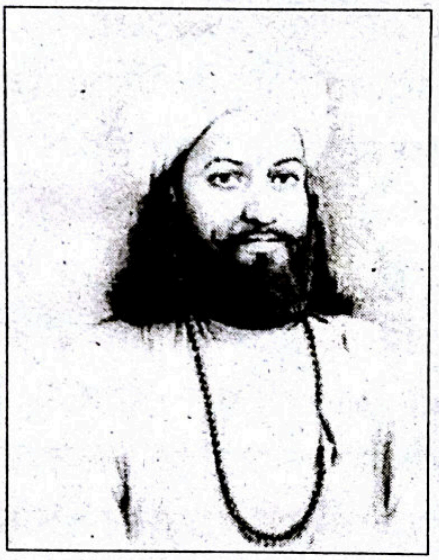

अकबर के दरबार में भी अनेक हिन्दू और मुस्लिम कवि हिन्दी के श्रीवृद्धि में प्रयासरत रहे लिपि चाहे फ़ारसी ही रही हो। शहज़ादा दानियाल स्वयं ही हिन्दी का एक योग्य कवि था और उसने कई सुयोग्य पात्रों को प्रश्रय भी दिया। अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना तो कुतुबन और मलिक मुहम्मद जायसी से ऊंचे स्तर पर आज भी हिन्दी साहित्य में जगमगा रहे हैं। मतहूरिया पाठक भी अकबर के दरबार में था, जिसने कलीचरित्र की रचना की। इस कवि को अकबर ने 'राव' की उपाधि और जागीर भी प्रदान की थी। इसी प्रकार केशव मिश्र और परवर जहांगीर के दरबारी कवि थे। जगन्नाथ कलावंत को 'किब्रासे' उपाधि देकर सम्मानित किया था। उसने शाहजहां के नाम पर बारह ध्रुपद तैयार किये थे। इसी प्रकार शेख पीर मुहम्मद सिलोन (मृत्यु 1070 हि० तदनुसार सन 1663-64) हिन्दी भी फ़ारसी के साथ-साथ लिखते थे। उनकी कविताएं प्रशंसनीय हैं। जुनैद मोहान चिश्ती अरबी, फ़ारसी व हिन्दी के उच्च कोटि के कवि थे। दारा शिकोह ने अनेक ग्रंथों के अनुवाद कराये तथा हिन्दी को संरक्षण प्रदान किया। उसके ही आदेश पर 'सार-संग्रह' नामक दोहा संकलन संपादित किया गया था।

बंगाल में ईसा की सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही मुस्लिम कवि दौलत क़ाज़ी ने 'लोर चान्दनी' बंगला काव्य का सृजन प्रारंभ कर दिया था, किन्तु उसके असमय काल कवलित हो जाने के कारण एक अन्य मुस्लिम कवि असावल ने इसे 1656 ई० में पूर्ण किया। यूसुफ़-जुलेख़ा की कथा को भी बंगला में अब्दुल हकीम ने काव्य स्वरूप प्रदान किया। दौलत वज़ीर बहराम ने 'लैला मजनूं' की मसनवी प्रस्तुत की। यमीन-जलाल प्रेम कथा को मुहम्मद अकबर ने काव्य रूप दिया। कबीर मुहम्मद ने रंगमाला शमशेर अली ने रीज़वान सहा (रिज़वान शाह) और शमशुद्दीन सिद्दीक़ ने भाव लाभ रचनाएं प्रस्तुत की। बंगला भाषा में अनेकों मुस्लिम लेखकों ने मुस्लिम और हिन्द बंगला दोनों में असंख्य रचनाएं सृजित की जो आज भी एक स्थान रखती हैं। औरंगज़ेब का पुत्र आज़म शाह हिन्दी (लिपि फ़ारसी) के प्रति बहुत प्रेम रखता था। उसकी आज्ञा से मुस्लिम कवि नवान ने 1680 ई० में 'शकुंतला' नाटक लिखा। आज़म शाह के ही हुक्म से विभिन्न कवियों के समूह ने कवि सम्राट बिहारी की बिहारी सतसई का संपादन प्रस्तुत किया। यह पुस्तक 'आज़म शाह' के नाम से प्रसिद्ध हुई। देवा-कवि शाह आलम का दरबारी कवि था। इसी शाह आलम प्रथम (1124 हि० तदनुसार 1712-13) का एक विशेष सेवक कवि आलम भी था, जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार किया था। इसी आलम ने राधाकृष्ण की लीलाओं की 'आलम केलि' काव्य रचना रची। क़ासिम पुत्र वाजिद ने केशवदास की सुप्रसिद्ध रचना 'रसिक प्रिया' पर सारगर्भित टीका लिखी। पटभर नामक गुजराती ब्राह्मण ने इलाहाबाद

के नवाब सैयद हिम्मत ख़ां के नाम पर 'हिम्मत प्रकाश हिन्दील' सन 1676 ई॰ में लिखी । एक और कवि बलवीरा ने भी नवाब हिम्मत ख़ां की आज्ञा से 'फ़ने-अरुज़' में पुस्तक 'पिंगलमनहरन' वि॰ सम्वत 1741 में लिखी । आलमगीरी काल के ही एक सुप्रसिद्ध हिन्दवी के कवि सैयद मुहम्मद सईद, जिन्हें सैयद मीरां भीक चिश्ती साबरी कहते हैं, कबत के आज भी क़व्वाल गाते हैं । उन्हीं के शिष्य महबूब आलम उर्फ़ शेख़ जीवन थे । इरियाणवी में उनकी रचना 'दर्द नाम-ए-मुहम्मद' है । 'महशर-नामा' भी उन्हीं की सुप्रसिद्ध रचना है । बुंदेली भाषा में 'रस-भूषण' याक़ूब ख़ां की देन है । अब्दुल रहमान ने फ़र्रुख़सियर के काल में 'नख़ शिख' संपादित की । 'रस-रत्नगार' नामक एक चिकित्सीय पुस्तक के रचनाकार सैयद पहाड़ सुपुत्र सैयद हम्ज़ा हैं । शेख़ सुलैमान ने एक मेराजनामा जिसका शीर्षक 'ख़ालिक़ नामा' था को काव्य रूप दिया । फ़ारसी व हिन्दी के कवि क्षेत्र में शेख़ खुश मुहम्मद क़ादरी का नाम अदब से लिया जाता है ।

बादशाह मुहम्मद शाह स्वयं हिन्दी के तत्कालीन स्वरूप (लिपि फ़ारसी) का अच्छा कवि था । उसका सृजित 'बारह-मासा' आज भी पढ़ा और गाया जाता है । उसी की आज्ञा से आज़म ख़ां ने 'सिंगार दर्पण' वि॰सं॰ 1706 में संपादित की । कवि आनन्द गहन भी मुहम्मद शाह का दरबारी कवि था । अमीर ख़ां को भी मुहम्मद शाह का संरक्षण प्राप्त था । आलम, फ़ैज़ और अकरम गुलाम नबी तथा अनवर ख़ां भी इसी शृंखला की कड़ी हैं । फ़ैज़ वही मुहम्मद मोअज़्ज़म 'फ़ैज़' हैं, जो फ़ारसी के साथ हिन्दी के भी महान कवि थे । वे संस्कृत के भी प्रकांड विद्वान थे । उन्होंने पुनः संस्कृत से 'लीलावती' नामक सुप्रसिद्ध रचना का अनुवाद किया था । ये डैडवाना के रहने वाले क़ाज़ियों के प्रसिद्ध परिवार के थे, इनका फ़ारसी दीवान और मसनवियां प्रकाशित हो चुकी हैं ।

रसखान का भक्ति काव्य मशहूर है । उनकी रचना 'प्रेम पायका' से ज्ञात होता है कि उनका जन्म विक्रमी सम्वत 1671 को हुआ । उनके बारे में प्रसिद्ध है कि वे कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम से इतने प्रभावित हुए कि स्वयं भी उनके भक्त हो गये । कृष्ण भक्तों की यह शृंखला रसखान पर ही समाप्त नहीं होती । इस शृंखला में अली ख़ां, शेख़ नबी, मीर अहमद, ताज ख़ां और पीरज़ादी बीबी का भी नाम सम्मान से लिया जाता है । उनकी रचनाएं ब्रजभाषा में हैं और उन्होंने ब्रजभाषा की श्रीवृद्धि में अतुलनीय योगदान दिया है । उपरोक्त तथ्य स्पष्ट घोषणा करते हैं कि भारतीय भाषाओं पर से संस्कृत भाषा की वट वृक्ष रूपी छत्रछाया हटाकर उन्हें स्वतंत्र रूप से पनपने और उनके संरक्षण एवं संरचना में मुस्लिम सुल्तानों, नवाबों, गद्यकारों और कवियों का एक बहुत बड़ा योगदान है । भले ही वह स्थानीय लिपि हो, उर्दू (फ़ारसी) लिपि हो या फिर देवनागरी लिपि हो । अंततः श्री वृद्धि तो स्थानीय भाषाओं तत्कालीन हिन्दी, ब्रज या अवधि भाषा की ही हुई । संस्कृत का अधिकतम साहित्य भी जनसाधारण को पठन-पाठन के लिए उपलब्ध हुआ । वह कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं रहा । इससे उसके पांडित्य और लालित्य का भी ज्ञान सर्व साधारण को प्राप्त हुआ ।


**Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya**

*The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-*

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

**Kindly send your cheque/draft in favour of the society**

*(Q. Hoda)* Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

**JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001**

"और ईमान वाली
स्त्रियों से कह दो कि वे भी
अपनी निगाहें बचा कर रखें और
अपने गुप्तांगों की रक्षा करें ।
और अपने शृंगार
प्रकट न करें, सिवाय उसके जो
उनमें खुला रहता है और अपने सीनों
पर अपने दुपट्टे डाले रहें ।
( क़ुरआन )

AWELLWISHER

BANGLORE



जिसकी जवानी जवानी के आफ़तों से महफ़ूज़ रही वह जन्नत का मुस्तहक़ है । ( हदीस )

S. RAFI AHMED
B.Sc., F.C.A.

(O) : 65609383
(R) : 65651869
Cell : 9243460157

# AHMED & CO.

Chartered Accountants

# 15, 1st Floor, Ebrahim Sahib Street, Shivajinagar, Bangalore-560001
E-mail : ahmedrafiin@yahoo.co.in

# इस्लाम में न्याय, सहानुभूति और सद्व्यवहार

❖ मौलाना सैयद हामिद अली

इस्लाम में इन्सानों के हक़ व अधिकार के संबंध में अल्लाह के ये संक्षिप्त शब्द सारगर्भित निर्देश की हैसियत रखते हैं । अल्लाह तआला फ़रमाता है–''निस्संदेह अल्लाह न्याय का, सद्व्यवहार का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है ।'' (क़ुरआन, 16:90)

प्रत्येक व्यक्ति मुस्लिम हो या ग़ैर-मुस्लिम, दोस्त हो या दुश्मन न्याय पाने का अधिकारी है । दुश्मनी में भी किसी व्यक्ति या गिरोह पर अन्याय करना ठीक नहीं–

''और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम न्याय करना छोड़ दो । न्याय करो यही तक़्वा (धर्म-परायणता) से लगती हुई बात है ।''

(क़ुरआन, 5:8)

हर इन्सान की जान आदर पाने योग्य है । अकारण और नाहक़ किसी का भी ख़ून नहीं बहाया जा सकता । यही हैसियत इन्सान के माल की भी है, उसे उससे छीना नहीं जा सकता । हर इन्सान की प्रतिष्ठा बनी रहे यह उसका हक़ है, किसी हाल में भी उस पर हाथ नहीं डाला जा सकता । हर मनुष्य को अपनी धारणा के अनुसार इबादत करने का अधिकार है, किसी को धर्म-परिवर्तन करने पर मजबूर नहीं किया जा सकता । किसी के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता, किसी के पूजा-स्थलों का अपमान नहीं किया जा सकता, किसी के धार्मिक गुरुओं को बुरा-भला नहीं कहा जा सकता, किसी के 'पर्सनल लॉ' को समाप्त नहीं किया जा सकता । इज़्ज़त व सम्मान के साथ जीवित रहने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार प्राप्त है, इस अधिकार से किसी को वंचित नहीं किया जा सकता । उचित व वैध तरीक़ों से रोज़ी कमाने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है, किसी का यह अधिकार छीना नहीं जा सकता । शिक्षा प्राप्त करना और अपने धर्म के अनुसार अपनी औलाद को शिक्षा दिलाना हर आदमी का अधिकार है । किसी का यह अधिकार समाप्त नहीं किया जा सकता । औरत हर हाल में आबरू और इज़्ज़त की अधिकारी है । उसकी इज़्ज़त को किसी हाल में भंग नहीं किया जा सकता । क़ानून प्रत्येक की सुरक्षा के लिए है, इस संबंध में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता । तात्पर्य यह कि इस प्रकार के मानव-अधिकार अमीर-ग़रीब, काले-गोरे, मुस्लिम, ग़ैर-मुस्लिम, दोस्त-दुश्मन सबके लिए हैं और इस्लाम की मौलिक शिक्षा केवल यही नहीं है कि सबके साथ न्याय हो, बल्कि न्याय की रक्षा और उसकी स्थापना मुसलमान के जीवन का मूल उद्देश्य बताया गया है ।

'ऐ ईमान लाने वालो ! न्याय को स्थापित करने वाले बनो और अल्लाह के लिए (इन्साफ़ की) गवाही देने वाले बनो चाहे गवाही स्वयं तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध हो । जिसके विरुद्ध गवाही दी जा रही है चाहे वह धनवान या निर्धन हो तो अल्लाह उसका अधिक भला चाहने वाला है तो तुम इच्छाओं के पालन में न्याय से न हटो ।' (क़ुरआन, 4:135)

अत्याचारी को चाहे कुछ ढील मिल जाए, लेकिन उसका परिणाम बड़ा दर्दनाक होता है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की एक हदीस अबू मूसा (रज़ि०) से रिवायत की गयी है कि :

'प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया : अल्लाह ज़ालिम को ढील देता है, मगर जब पकड़ता है तो फिर छोड़ता नहीं । फिर आप (सल्ल०) ने क़ुरआन की यह आयत पढ़ी, 'और इसी प्रकार तुम्हारे रब की पकड़ होती है जब वह ज़ालिम बस्तियों को पकड़ता है, निस्संदेह उसकी पकड़ सख़्त और दर्दनाक है ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के अप्रिय और अवज्ञाकारी बंदे आख़िरत (परलोक) में नूर से वंचित होंगे वे अंधेरों में भटकते-भटकते नरक में जा गिरेंगे । प्रत्येक बुराई जो इन्सान दुनिया में करेगा, वह आख़िरत में अंधेरे का रूप धारण कर लेगी और ज़ुल्म बहुत से अंधेरों का रूप धारण करेगा । एक हदीस है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया– 'ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरों का रूप धारण करेगा ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)

इससे न्याय का महत्व और ज़ुल्म की बुराई अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है । यह बात भी जान लेना ज़रूरी है कि न्याय करने के लिए यह शर्त बिल्कुल नहीं है कि लोग

"अल्लाह उस आदमी के साथ दयालुता का मामला करेगा जो क्रय-विक्रय और क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने में नरमी और शालीनता बरते।" (हदीस)

**Abdul Malik** ✆ 9845311911

# UNIQUE CREATIONS

**Spl. in Unipole & Structure Hoarding**

**#4, Bldg NO. 29/35, 1st Main Road,**
**Opp. Masjid-e-Husna, SRK Garden,**
**Jayanagar East, Bangalore-560041**
**E-mail : uniquecreations2008@gmail.com**

हमारे साथ न्याय करें, तब ही हम भी न्याय करें। लोग न्याय करें या अन्याय हमें हर हालत में न्याय करना और अन्याय से बचना चाहिए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया है–

'लोगों के पीछे चलने वाले न बनो कि यूं कहने लगो, अगर लोग सद्व्यवहार करेंगे, तो हम भी करेंगे और अगर वे जुल्म करेंगे तो हम भी करेंगे। नहीं, अपने आपको इस बात के लिए तैयार करो कि अगर लोग अच्छा व्यवहार, करें, तो तुम अच्छा व्यवहार करो और वे दुर्व्यवहार करें तो तुम अन्याय न करो।' (तिरमिज़ी)

इस्लाम ने केवल न्याय करने ही का आदेश नहीं दिया है, बल्कि उसने आगे बढ़कर मनुष्यों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया है। यह आदेश भी सब इन्सानों के लिए है। इसमें मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम के बीच कोई अंतर नहीं। हमारे दिल में हर इन्सान के लिए दया होनी चाहिए। प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया है–

'दया करने वालों पर वह 'दयावान' (अल्लाह) दया करेगा। धरती वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।' (तिरमिज़ी, अबू दाऊद)

हर इन्सान आदम की संतान होने के कारण हमारा भाई है और भाई के साथ हमारा जो व्यवहार होना चाहिए, वही व्यवहार हमें इन्सान से करना चाहिए। हम उस पर दया करें, दिल से उसका भला चाहें, उसे अच्छी से अच्छी सलाह दें, कठिनाइयों में उसकी सहायता करें। ज़रूरत पर उसके काम आएं, उससे सज्जनता का व्यवहार करें और उसकी जो सेवा हम कर सकते हों, उससे पीछे न हटें।

जो व्यक्ति जितना अधिक बेसहारा, कमज़ोर, ग़रीब और परेशान है, उतना ही वह हमारी सहानुभूति, हमदर्दी, ध्यान और सहायता के योग्य है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसे सहारा दें।

'अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, विधवाओं और ग़रीबों के लिए भाग-दौड़ करने वाला अल्लाह की राह में भाग-दौड़ करने वाले की तरह है और मेरा विचार है, आप (सल्ल०) ने यह भी कहा, वह रात को जाग कर इबादत करने वाले की तरह है, जो कभी नहीं थकता और उस व्यक्ति की तरह है जो हमेशा रोज़े (उपवास) से रहता है।'

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाहु अकबर (अल्लाह महान है)! ग़रीबों और विधवाओं की सेवा करने का कितना बड़ा बदला है। अनाथ के बारे में प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया–

'जो व्यक्ति अपने और किसी दूसरे व्यक्ति के यतीम (अनाथ) के खाने-पीने आदि की व्यवस्था करेगा, वह स्वर्ग में मेरे साथ इस प्रकार रहेगा। (आप सल्ल० ने) अपने अंगूठे के पास की उंगली और बीच की उंगली से संकेत किया और इन दोनों के बीच थोड़ा-सी दूरी रखी।' (बुख़ारी)

अनाथ का पालन-पोषण करने वाले का स्थान कितना ऊंचा है। इसके विपरीत अनाथ का माल हड़प करने वालों का परिणाम बड़ा ही दर्दनाक और भयानक है। कुरआन मजीद में है–

'जो लोग यतीमों (अनाथों) का माल जुल्म (अत्याचार) से खाते हैं वे अपने पेट में आग भरते हैं और वे नरक की भड़कती हुई अग्नि में जाएंगे।' (कुरआन, 4:10)

यह बात फिर याद कर लीजिए कि ये निर्देश मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों दोनों के बारे में है।

जो लोग हमारे पड़ोस में रहते हैं–चाहे वे मुसलमान हों या ग़ैर-मुस्लिम–वे हमारी सहानुभूति और सद्व्यवहार के दूसरों की अपेक्षा अधिक अधिकारी हैं। कुरआन मजीद में पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया गया है। रिश्तेदार पड़ोसी के साथ भी और उस पड़ोसी के साथ भी जिससे कोई रिश्तेदारी नहीं है और हदीसों से भी मालूम होता है कि पड़ोसी के हम पर असाधारण हक़ और अधिकार हैं। प्यारे नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं–

'जिबरील मुझ से पड़ोसी के बारे में बराबर ताकीद करते रहे, यहां तक कि मुझे ख़याल होने लगा कि वे उसे (सम्पत्ति का) वारिस (उत्तराधिकारी) बना देंगे।'

(बुख़ारी, मुस्लिम)

एक दूसरी जगह आप (सल्ल०) ने फ़रमाया–

'अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह मोमिन नहीं। पूछा गया कौन! (मोमिन नहीं है?) ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! प्यारे नबी (सल्ल०) ने उत्तर दिया, जिसका पड़ोसी उसके उत्पात से बचा हुआ न हो।'

(बुख़ारी, मुस्लिम)

और जो कोई
अल्लाह और उसके
रसूल ( सल्ल॰ ) की
आज्ञा का पालन करे और
अल्लाह से डरे और उसकी
सीमाओं का ख़्याल रखे,
तो ऐसे ही लोग
सफल हैं ।
( क़ुरआन, 24:52 )

GLOBE CONSTRUCTIONS

19, Kempian Block, Ist Main Road,
J. C. Nagar, Banglore-6

# तमिस्रा से जूझते, चिराग़ ग़ज़लों के

■ डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'

हिन्दी में ग़ज़लें, प्रभूत परिमाण में लिखी जा रही हैं। पत्रकारिता की भाषा में कहूं तो ग़ज़लों का रिकार्ड उत्पादन हो रहा है। हिन्दी में दो श्रेणी के ग़ज़लकार हैं। एक वे, जिन्होंने उर्दू ग़ज़ल की गुरु-शिष्य परम्परा और ग़ज़ल की शास्त्रीयता को आत्मसात करके हिन्दी ग़ज़ल को समृद्ध किया है। दूसरी श्रेणी में वे ग़ज़लकार हैं जिन्होंने उर्दू ग़ज़ल की शास्त्रीयता से परिचित नहीं हैं, परन्तु स्वाध्याय के बल पर हिन्दी मात्रिक छन्दों में ग़ज़लें लिखकर स्वयं अपना मार्ग तलाश किया है। वैसे एक तीसरी श्रेणी और भी है, जो न उर्दू परम्परा की गरिमा से परिचित है न हिन्दी की छन्द परम्परा से और न ही वह स्वाध्यायशील है। इस तृतीय श्रेणी के ग़ज़लबाज़ अपनी हर तुकी-बेतुकी रचना को ग़ज़ल कहने पर आमादा हैं। आप उसे ग़ज़ल मानते हैं या नहीं इससे उनको कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

वरिष्ठ कवि श्री मुकुंद कौशल, प्रथम श्रेणी के ग़ज़लकार हैं। उनका समन्वय दूसरी श्रेणी से भी है। उन्होंने उर्दू की गुरुशिष्य परम्परा अपनायी हुई है और संभवत: वे स्वाध्यायी भी हैं। उनके नवीनतम ग़ज़ल संग्रह "चिराग़ ग़ज़लों के" में उर्दू ग़ज़ल की शास्त्रीयता, उक्ति वैविध्य और कथ्य की कोमल भंगिमा भी है और हिन्दी की प्रगतिशील जीवन दृष्टि, आधुनिक बोध, कथ्य विस्तार और सांस्कृतिक सुगंध भी। वे आधुनिक भावबोध और मूल्य संक्रमण की संवेदना को अभिनव शिल्प के साथ अभिव्यक्त करने वाले अशआर भी कहते हैं।

कथ्य की दृष्टि से अब ग़ज़ल का आकाश, अनंत विस्तार वाला हो गया है। इस क्षेत्र में आधुनिक ग़ज़लकारों ने अनेक परम्पराएं तोड़ी हैं और अनेक नयी परम्पराएं भी गढ़ी है। यूं कहा जाए कि आज ग़ज़ल अपने काव्य मूल्य स्वयं ही गढ़ और तराश रही है, तो अतिश्योक्ति न होगी। मुकुंद जी की ग़ज़लों में मूल्यों के धरातल पर नयी ज़मीन तोड़ने की ललक देखी जा सकती है, परन्तु सकारात्मक तथ्य यह है कि यह प्रगतिशीलता परम्परा के विकास के रूप में आयी है। परम्परा के विध्वंस के रूप में नहीं। उनके कथनों में ग़ज़ल के सभी तत्व, संवेदना की तरलता, भावबोध की सान्द्रता उक्ति, वैचित्र्य, कहन की बारीक भंगिमा और संगीतात्मकता अपने उत्कृष्ट रूप में विद्यमान है।

## आज फिर नाटक रचाये जा रहे हैं

आज फिर नाटक रचाये जा रहे हैं।
चांद औ सूरज उगाये जा रहे हैं॥
किस क़दर नादान अपने रहनुमा हैं।
आंकड़ों के वन लुटाये जा रहे हैं॥
सब कहीं बारूद-सी नफ़रत बिछी है।
स्वार्थ की चिनगी लगाये जा रहे हैं॥
कारख़ाने में धुएं के साथ ही हम।
चिमनियों में अब उठाये जा रहे हैं॥
मरुथली जीवन कहां तक हम जिएंगे।
लोरियां गा-गा सुलाये जा रहे हैं॥

*(2)*

मानव-मूल्यों का ह्रास हो रहा है।
आदर्शों का उपहास हो रहा है॥
जीवन के सुरक्षित नन्दन-कानन में।
कुंठा-कवलित मधुभास हो रहा है॥
तम के पहरे में सूरज सहमा है।
नभ षड्यंत्रों का दास हो रहा है॥
संबंधों के ताने-बाने उलझे।
टुकड़े-टुकड़े विश्वास हो रहा है॥
कम्पित धरती बारूदी मेघों से।
रक्तिम लपटों का भास हो रहा है॥
उल्लास हृदय से हुआ प्रवासित है।
सुनेपन का एहसास हो रहा है॥
विघटन-शर से अनुविद्ध स्वदेश हुआ।
आत्माघ्न का अभ्यास हो रहा है॥

● डॉ॰ गणेशदत्त सारस्वत

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

# G.C. Associates

No. 129, 7th Main Road,
4th Block, Jayanagar,
Bangalore-11

# एक हत्या ऐसी भी

❖ डॉ॰ परमलाल गुप्त

बलवीर क़रीब दस साल से सेठ माधौलाल की कोठी पर चौकीदार के रूप में तैनात था । वह अपना काम पूरी ईमानदारी और मुस्तैदी से करता था । वह पच्चीस वर्ष की उम्र से काम पर लगा था । और अब उसकी उम्र पैतीस साल थी । सेठ माधौलाल को कभी उससे शिकायत नहीं हुई । वे उससे प्रसन्न थे ।

बलवीर खुद कभी ऐसा मौक़ा नहीं आने देता था कि कोई उस पर उंगली उठा सके । वह अच्छी क़द-काठी का फुर्तीला जवान था । वह हमेशा अपनी वर्दी में चुस्त-दुरुस्त रहता । उसके रहते कोठी में कभी कोई वारदात नहीं हुई । एक बार कुछ बदमाशों ने कोठी की पीछे की दीवार से घुसने की कोशिश की थी, परन्तु बलवीर की सतर्कता ने उनकी कोशिश विफल कर दी थी । इससे सेठ माधौलाल का उस पर विश्वास जम गया था ।

इधर बलवीर को कुछ दिनों से पेशाब में जलन और अवरोध की शिकायत होने लगी, तो वह परेशान रहने लगा । उसने छोटे-छोटे डॉक्टरों को दिखाकर दवा भी खायी, परन्तु उसको आराम नहीं हुआ । जब वह काम करने से ही अशक्त हो गया, तब उसने अपने मालिक को बता देना ही ठीक समझा ।

वह मौक़ा तलाशकर सेठ माधौलाल के पास पहुंचा । सेठ माधौलाल भी बलवीर की हालत देखकर दंग रह गये, क्योंकि इधर दो-तीन सप्ताह से ज़्यादातर बाहर रहने की वजह से उन्होंने बलवीर को नहीं देखा था । उन्होंने बलवीर को देखकर खुद पूछा–''यह तुम्हें क्या हुआ बलवीर ?''

बलवीर ने दयनीयता से कहा–'सरकार, मुझे पेशाब में जलन होती है, कभी ख़ून भी आ जाता है, दवा भी खायी, पर ठीक नहीं हुआ । आप मुझे कुछ दिनों की छुट्टी दे दें । ठीक होने पर मैं फिर काम पर आ जाऊंगा ।

''लेकिन तेरा इलाज भी तो ज़रूरी है । नहीं तो ठीक कैसे होगा ।''

''आप ठीक कहते हैं सरकार । पर इलाज में तो बहुत पैसा लगेगा ।''

''तू चिंता न कर । मैं तेरा इलाज कराऊंगा । कल सवेरे मेरे साथ चलना ।''

बलवीर यह सुनकर श्रद्धा से गद्‌गद् होकर सेठ माधौलाल के चरणों पर आ गिरा और रुंध कंठ से बोला–''सरकार आप आदमी नहीं देवता हैं । आपके लिए मैं अपनी ज़िन्दगी भी कुरबान कर दूं तो भी कम है ।''

सेठ माधौलाल पक्के खिलाड़ी थे । बिना अपना मतलब सधे कोई काम नहीं करते थे । उनके भतीजे के गुर्दे ख़राब हो गये थे और उसका इलाज ट्रिनिटी नर्सिंग होम में चल रहा था । यह नर्सिंग होम उनके निजी डॉक्टर विक्रम शर्मा का था । उन्होंने सेठ माधौलाल को ऐसे किसी व्यक्ति की तलाश के लिए कहा था, जो अपना गुर्दा दे सके । सेठ माधौलाल को बहुत कोशिशों के बावजूद ऐसा कोई व्यक्ति अब तक नहीं मिल सका था । वे इसके लिए पचास हज़ार रुपये तक देने को तैयार थे । पर अब डॉ॰ विक्रम शर्मा द्वारा बलवीर का गुर्दा निकलवाने से उनका काम सस्ते में निबटने वाला था ।

दूसरे दिन पूरी दिलासा देकर सेठ माधौलाल ने बलवीर को ट्रिनिटी नर्सिंग होम में भर्ती करा दिया और अकेले में डॉ॰ विक्रम शर्मा से कहा–''डॉक्टर अभी तक गुर्दे का इन्तिज़ाम नहीं हुआ । यह बलवीर मेरा नौकर है । इसे शायद पथरी की शिकायत हो । ऑपरेशन करते वक़्त इसका एक गुर्दा निकाल लीजिए । इसे इसका पता न चले । इसके एवज में यह पच्चीस हज़ार आपकी फ़ीस इस बैग में है ।

डॉ॰ विक्रम शर्मा की बांछें खिल उठीं । उन्होंने बैग अपनी मेज की दराज़ में खिसकाते हुए कहा–''सेठ जी, आप चिंता न करें । आपके कहने के अनुसार सब काम हो जाएगा । आपने पहले भी ऐसा कहा होता तो मैं इन्तिज़ाम कर देता पर यह केस सेफ है, इसमें किसी बवाल की आशंका नहीं है ।''

''इसलिए तो मैं इसे ले आया, आप मेरे दोस्त हैं । मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से आपको कोई ज़हमत उठानी

# इस्लाम क्या है?

| | | |
|---|---|---|
| ❖ इस्लाम एक सिद्धान्त, एक आन्दोलन | मरयम जमीला | 80.0 0 |
| ❖ इस्लाम का आरम्भ | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 4.00 |
| ❖ इस्लाम का परिचय | मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां | 8.00 |
| ❖ इस्लाम का नैतिक दृष्टिकोण | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 10.00 |
| ❖ इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 2.00 |
| ❖ इस्लाम का संदेश | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 10.00 |
| ❖ इस्लाम की आध्यात्मिक व्यवस्था (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 3.00 |
| ❖ इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 3.00 |
| ❖ इस्लाम की गोद में | मुहम्मद असद(नव-मुस्लिम पूर्व लियोपोल्ड) | 60.00 |
| ❖ इस्लाम की जीवन-व्यवस्था | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| ❖ इस्लाम की नैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 3.00 |
| ❖ इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था और दहेज प्रथा | प्रो० उमर हयात ख़ां ग़ौरी | 15.00 |
| ❖ इस्लाम की बुनियादी बातें | मौलाना अब्दुल हई | 10.00 |
| ❖ इस्लाम की बुनियादी तालीमात (खुतबात मुकम्मल) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 75.00 |
| ❖ इस्लाम की राजनैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 3.00 |
| ❖ इस्लाम की शीतल छाया | मौलाना सय्यद हामिद अली | 10.00 |
| ❖ इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था (पाकेट साइज़) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 3.00 |
| ❖ इस्लाम के चारों ओर | डॉ० कौसर यज़दानी नदवी | 12.00 |
| ❖ इस्लाम क्या है? | मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां | 5.00 |
| ❖ इस्लाम जिससे मुझे प्यार है | अब्दुल्लाह अडियार | 25.00 |


## MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
**E-mail:** mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

पड़े । अब मैं चलता हूं । मैं कल फिर आऊंगा, तब तक आप इसकी पूरी जांच कर लीजिए।'' सेठ माधौलाल ने उठते हुए कहा और डॉ॰ शर्मा से हाथ मिलाकर चले गये ।

बलवीर नर्सिंग होम का इतना सारा ताम-झाम देखकर वैसे ही अभिभूत था । डॉक्टर विक्रम शर्मा के आश्वस्त करने पर वह और निश्चिंत हो गया । डॉ॰ शर्मा ने उसकी सारी जांच करायी । इससे उन्हें मालूम हुआ कि बलवीर को पथरी की शिकायत नहीं है, बल्कि उसका एक गुर्दा ही पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है । इस गुर्दे को निकाल देने से एक स्वस्थ गुर्दे के आधार पर बलवीर भली-चंगी ज़िन्दगी जी सकता है । यदि यह गुर्दा निकाल लिया गया तो बलवीर की हालत और ख़राब हो जाएगी और वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा न रह सकेगा । इससे डॉ॰ शर्मा चिंता में पड़ गये ।

दूसरे दिन सेठ माधौलाल के आने पर उन्होंने बलवीर की बीमारी की असलियत बतायी और चिंतित होकर पूछा–''अब क्या किया जाए ?''

सेठ माधौलाल ने हंसकर कहा–''यार डॉक्टर, आप क्यों चिंता करते हैं ? उसका वही गुर्दा निकाल लीजिए । इलाज से बलवीर कुछ समय तो खींच ही सकता है । वह तो यही सोचेगा कि उसका अच्छे से अच्छा इलाज हुआ । मालिक ने ख़ूब मदद की । पर भगवान को उसका ठीक होना मंज़ूर नहीं था, इसमें कोई क्या कर सकता है ?''

सेठ माधौलाल की बात से डॉ॰ विक्रम शर्मा की सारी हिचक जाती रही । इसके अलावा उन पर पच्चीस हज़ार रुपये का ऐसा दबाव था कि उनकी नैतिकता चिंदी-चिंदी होकर उड़ गयी थी । उन्होंने कहा–''ठीक है । मरीज़ को बता देते हैं कि पथरी है, ऑपरेशन होगा ।''

''चलो मैं भी चलता हूं । इससे वह और आश्वत हो जाएगा ।'' सेठ माधौलाल बोले ।

दोनों को देखकर बलवीर का हृदय उमग उठा । उसने उठने की कोशिश की तो डॉ॰ शर्मा ने उसे रोक दिया । उसे आश्वस्त करते हुए नर्स को कई हिदायतें दीं ! बलवीर इससे पूरी तरह निश्चिंत हो गया ।

ट्रिनिटी नर्सिंग होम में कई डॉक्टर थे, जो अपने निश्चित समय पर आते थे और बाक़ी समय में अपनी अलग प्रैक्टिस करते थे । नर्सिंग होम से उन्हें इसके लिए मासिक भुगतान होता था । नर्सिंग होम में जो मरीज़ भरती होता था, उसका इलाज वही डॉक्टर करता था जिसे मरीज़ पहली विजिट में दिखाता था । परन्तु आवश्यकता पड़ने पर दूसरे डॉक्टरों की भी मदद ली जा सकती थी । मरीज़ से सभी व्यवस्थाओं का भारी शुल्क वसूल किया जाता था । पानी, बिजली, सफ़ाई, बिस्तर, खाना, नर्स, टेस्ट, दवा, डॉक्टरों की फ़ीस आदि मिलाकर मरीज़ का हज़ारों का बिल बनता था । इसलिए इसमें अक्सर बड़े आदमी ही इलाज के लिए आते थे । बहुत से ऐसे लोग भी आते थे जो अपनी बीमारी के इलाज के लिए अपना घर-बार तक बेच देते थे । मरीज़ ठीक हो या न हो, पर बढ़िया इलाज होने की संतुष्टि उसे अवश्य हो जाती थी और ट्रिनिटी नर्सिंग होम की प्रतिष्ठा एवं ख्याति बरक़रार रहती थी ।

बलवीर तो इस तरह की देख-रेख और इलाज की कल्पना भी नहीं कर सकता था । डॉ॰ विक्रम शर्मा उसे कई बार देख जाते थे । इस कारण बलवीर बहुत प्रसन्न था । दवाओं के असर से उसके पेशाब से ख़ून आना भी बन्द हो गया था और उसे काफ़ी राहत महसूस हो रही थी ।

पांचवें दिन उसके ऑपरेशन की तैयारी की गयी । उसे ऑपरेशन रूम में ले जाया गया । उसे सब तरह से आश्वस्त करके डॉ॰ विक्रम शर्मा ने रीढ की हड्डी को भी संवेदन शून्य करने वाला लांग एनैस्थीसिया का इंजेक्शन लगाया । जब वह कुछ बेहोशी की हालत में आया तब उससे कई फार्मों पर हस्ताक्षर कराये । उसके पूर्ण संज्ञा शून्य होने पर


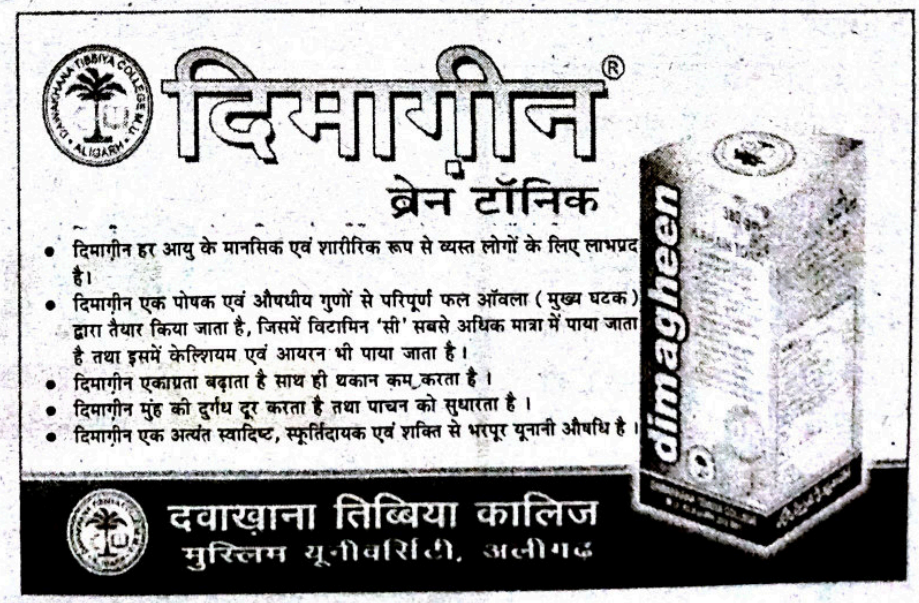

उन्होंने ऑपरेशन करके उसका स्वस्थ दायां गुर्दा निकाल लिया, जिसकी उन्हें सेठ माधौलाल के भतीजे के लिए ज़रूरत थी । इसके बाद उन्होंने पूरी सावधानी से टांके लगाकर उसे वापस अपने बिस्तर पर पहुंचवा दिया । नर्स को कुछ विशेष एंटीबायोटिक्स देने तथा ग्लूकोज चढ़ाने की हिदायतें देकर वे सेठ माधौलाल के भतीजे के गुर्दा प्रत्यारोपण में लग गये, जिसके लिए उन्हें पहले ही अच्छी ख़ासी रक़म प्राप्त हो चुकी थी । सब काम भली प्रकार पूर्ण होने पर उन्होंने राहत की सांस ली । इसके बाद उन्होंने सेठ माधौलाल को सब बता दिया । सेठ माधौलाल ने इसके लिए डॉ॰ शर्मा को बधायी दी और आभार प्रकट किया ।

पन्द्रह दिन बाद डॉ॰ शर्मा ने बलवीर को छुट्टी दे दी । तब तक उसके टांके सूख गये थे और वह उठने बैठने लगा था ।

डॉ॰ शर्मा ने उससे कहा–''अब तुम ठीक हो । घर पर ही धीरे-धीरे चलने-फिरने का अभ्यास करो । जो दवाएं दी जाएंगी, उन्हें एक हफ़्ते खाते रहना । एक महीने में भले चंगे हो जाओगे ।''

डॉ॰ शर्मा का आभार प्रकट करके बलवीर रिक्शे से अपने घर आ गया ।

बलवीर की हालत दिनोंदिन ख़राब होती गयी । उसके शरीर के दाहिने भाग में लकवा मार गया । उसका मुंह टेढ़ा हो गया, दाहिना हाथ लटक गया और दाहिना पैर बेजान हो गया । वह दुबारा नर्सिंग होम पहुंचा और डॉक्टर विक्रम शर्मा से मिला ।

डॉ॰ विक्रम शर्मा ने उसका कोई नोटिस न लेते हुए कहा–''यह तुम्हारी दूसरी बीमारी है । इसमें मैं क्या कर सकता हूं ?''

बलवीर ने दयनीयता से कहा–''डॉक्टर साहब, मैं ग़रीब आदमी हूं । मुझे आपका ही सहारा है । सेठ जी से मैं अब किस मुंह से कहूं । मैं अपनी सारी जमापूंजी आपको दे दूंगा । आप मेरा इलाज कर दें ।''

''अरे भाई, यहां इलाज में आठ-दस हज़ार लग जाएंगे । इसलिए बेहतर है कि कहीं और इलाज करा लो । और फिर यह ऐसा रोग ही है कि बहुत वक्त लेता है ।'' डॉ॰ शर्मा ने समझाया और कहा–

''देखो, अब वक़्त न ख़राब करो, मुझे दूसरे मरीज़ों को भी देखना है ।''

''डॉक्टर साहब, मैं आपके वक़्त की क़ीमत जानता हूं । मैं ज़ेवर वग़ैरह बेचकर रुपये का इन्तिज़ाम कर दूंगा । आप मेरा इलाज कर दें ।

''ठीक है तो रुपये लेकर आ जाना । जो हो सकता है, मैं अवश्य करूंगा ।'' कहकर डॉ॰ शर्मा उठकर चले गये ।

बलवीर ने वहां से लौट कर जो कुछ घर में था सब बेच दिया । कुछ उसके पास नक़द रुपया भी था । इस तरह सब मिलाकर क़रीब पन्द्रह हज़ार हो गये । उसने सोचा कि ठीक होने पर फिर से कमा लेगा और शादी करके आराम से रहेगा । अभी यह सब किसके लिए रखना है ? जान है तो जहान है ।

उसने ट्रिनिटी नर्सिंग होम में जाकर दस हज़ार रुपये डॉ॰ शर्मा के हवाले कर दिये । बाक़ी वक़्त ज़रूरत के लिए अपने पास रखे ।

डॉ॰ शर्मा जानते थे कि बलवीर का ठीक होना असंभव है । उसके शरीर में केवल एक रुग्ण गुर्दा है, जो ज़्यादा दिन

P. Usman
K. M. Iqbal

Ph. : 0832-2514213
2512910
Mobile : 09422437171
09822586829
09422443990
09422437272

P.U.F.

Fish Merchants & Commission Agent

Kharewada, Vasco-Da-Gama-GOA-403802

नहीं चल सकता । उसे लकवा भी इसी वजह से लगा है । उसकी अंतिम परिणति तो मौत ही है । इस कारण वे उसे ज़्यादा दिन नर्सिंग होम में नहीं रखना चाहते थे । परन्तु उसे दिलासा देना भी ज़रूरी था । इसके एवज में उन्हें दस हज़ार रुपये भी मिल गये थे । इसलिए उन्होंने उसे आश्वस्त करते हुए इलाज के लिए भर्ती कर लिया ।

दवा, इंजेक्शन, टॉनिक, सेंक आदि से बलवीर को कुछ राहत मालूम हुई तो डॉ॰ शर्मा ने उसे छुट्टी दे दी । जब बलवीर ने चल-फिर न पाने की अपनी बेबसी बतायी, तब उन्होंने उसे कुछ दिन बैसाखी के सहारे चलने की सलाह दी और साथ में कुछ दवाएं भी खाने के लिए लिख दीं ।

बलवीर इस उम्मीद पर घर लौट आया कि वह स्वस्थ होकर पुनः अपना काम करने लगेगा । परन्तु जैसे-जैसे दिन बीतते गये वह स्वस्थ होने के बजाय और अशक्त होता गया । उसमें उठने-बैठने तक की ताक़त न रही । यहां तक कि वह आस-पड़ोस के लोगों की दया पर निर्भर हो गया ।

उन्हीं दिनों मैं अपनी शोध के सिलसिले में लोगों के रहन-सहन के संबंध में उस क्षेत्र का सर्वेक्षण कर रहा था । इत्तिफ़ाक़ से मेरी भेंट बलवीर से हुई । उसने अपनी बीमारी और इलाज के संबंध में बताया । उसे यह मालूम नहीं था कि उसका गुर्दा निकाल लिया गया है । वह तो सेठ माधौलाल और डॉ॰ विक्रम शर्मा की बहुत प्रशंसा कर रहा था और अपने भाग्य को ही दोष दे रहा था । वह जीना चाहता था । इसलिए उसके शब्दों में बड़ी व्यथा थी । उसकी यह व्यथा मेरे हृदय की गहराई तक जाकर मुझे आरी की तरह काटने लगी ।

मैंने बलवीर से कहा–"तुम इतने निराश क्यों होते हो ? मैं तुम्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा देता हूं । वहां भी अच्छे डॉक्टर हैं । तुम ठीक हो जाओगे ।"

बलवीर के मन में आशा की किरण चमकी, जिसका आभास उसके मुख पर हुआ । पर उसने शंका की–"इतना सारा इलाज हुआ, अब क्या ठीक होगा बाबू जी ? हां, यहां घर में पड़े रहने से तो जब तक ज़िन्दा रहूंगा, आपका जस गाता रहूंगा ।"

मैंने उसका हाथ अत्मीयता से दबाकर कहा–"तुम अभी मेरे साथ चलो । मेरे पास गाड़ी है । सब ठीक हो जाएगा ।"

बलवीर की आंखों में मेरे प्रति कृतज्ञता के आंसू उमड़ उठे । मैंने उसे एक पड़ोसी की मदद से अपनी गाड़ी में बैठाया और उसे सरकारी अस्पताल ले जाकर भर्ती करा दिया । इसमें मुझे कोई दिक़्क़त नहीं हुई । वहां मेरे एक मित्र डॉक्टर थे । मैंने बलवीर को उन्हीं के सुपुर्द कर दिया ।

दूसरे दिन मेरे मित्र डॉक्टर ने जो रिपोर्ट दी, वह चौंकाने वाली थी । इसी से मुझे पता चला कि इलाज के बहाने बलवीर से बिना बताए उसका गुर्दा निकाल लिया गया था और धन के लोभ में उसे मौत के मुंह में ढकेल दिया गया था । डॉक्टर जो इन्सानी रिश्ते में देवता स्वरूप होते हैं, वही व्यवसायी बनकर इतने गिर जाते हैं कि अपने फ़ायदे के लिए मनुष्य को मौत के मुंह में ढकेल सकते हैं ।

मैं बलवीर के संतोष के लिए डॉ॰ विक्रम शर्मा से मिला । उन्होंने इस संबंध में कुछ भी कहने-सुनने से इन्कार कर दिया । ट्रिनिटी नर्सिंग होम में ही मुझे बलवीर की कथा के सूत्र मिल गये । मैंने बलवीर की तरफ़ से अदालत में मामला दर्ज कराया । अदालत ने नोटिस जारी किये । परन्तु किसी फ़ैसले से पहले ही बलवीर चल बसा ।




## राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान

अ०भा० साहित्य संगम, 261/3, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-313001 सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं संपादकों से वर्ष 2011 (द्वितीय) के राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्टियां आमंत्रित करता है ।

इच्छुक प्रतिभागी अपनी श्रेष्ठ पुस्तक (कृति) हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, राजस्थानी, मराठी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित की दो प्रतियां, अपना संक्षिप्त परिचय, एक रंगीन फोटो तथा अपना पतायुक्त पोस्टकार्ड, 25/- रुपये के छोटे पोस्टेज टिकट (एक-एक रुपये वाले) के साथ 30 अगस्त 2011 तक पंजीकृत डाक अथवा कोरियर द्वारा उपरोक्त पते पर भिजवाकर प्रतिभागी बन सकते हैं ।

कोरियर से भिजवाते समय, कार्यालय का फ़ोन नं० 2411029 या मोबाइल नं० 9413763991 अवश्य लिखें ।

## लोकार्पण

स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रीय ढोला गायक पं० गया प्रसाद शर्मा समृति समिति के तत्वावधान में गतिशील साहित्य संस्था ''मनीषा'', फ़िरोज़ाबाद की एक काव्य गोष्ठी में गत दिनों डॉ० रामसनेही लाल 'यायावर' की तीन साहित्यिक कृतियों– 'समकालीन गीति काव्य : संवेदना और शिल्प', 'अंधा हुआ समय का दर्पण', और 'नये युग का जनक' का लोकार्पण हुआ ।

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन की अध्यक्षता में संपन्न कार्यक्रम का आरंभ मुख्य अतिथि डॉ० मक्खन लाल पराशर, चन्द्रपाल शर्मा शीलेश एवं डॉ० पुन्नी लाल सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर कवियों का मनभावन काव्य पाठ भी हुआ ।

## शुभदा पांडेय सम्मानित

नागपुर, महाराष्ट्र की ज्योतिबा फूले प्रतिभा संशोधन अकादमी की ओर से वर्ष 2011 में साहित्यकार शुभदा पांडेय जो असम विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ में कार्यरत हैं, को अमृता प्रीतम राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मान से सम्मानित किया गया है ।

## जय जगत भारत रत्न पुरस्कार

विविध क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को राष्ट्रीय स्तर पर जय जगत भारत रत्न केसरी से सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार समाज सेवक, कवि, गीतकार, गायक, लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, कलाकार आदि को दिया जाता है । महिला, पुरुष, बालक-बालिका सभी को यह पुरस्कार दिया जाता है ।

पुरस्कार के लिए आवेदन के साथ अपने कार्य का विवरण, अख़बार में छपे समाचार की फ़ोटो कॉपी के साथ इस पते पर भेजें : अखिल भारतीय कला साहित्य संस्कृति अकादमी, युवा समूह, शिवाजी चौक, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)


**SHATABDI FOUNDATION, GAYA**

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

*Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".*

*(ProfZ.H.Khan)* Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

# खेती पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कसता शिकंजा

● भारत डोगरा
● बाबूलाल नागा

हाल के वर्षों में ग़रीब व विकासशील देशों की खेती किसानी के लिए एक बड़ा संकट यह सामने आया है कि धनी व विकसित देशों की कुछ विशालकाय कंपनियां या इनके सहयोगी खाद्य व कृषि व्यवस्था पर अपना नियंत्रण आश्चर्यजनक हद तक बढ़ाना चाहती हैं । इसके लिए वे विशेषकर बीज व अनुसंधान क्षेत्र पर अपनी पकड़ मज़बूत करना चाहती हैं । हाल के आंकड़ों के अनुसार विश्व में बीज का 35 प्रतिशत बाज़ार मात्र पांच बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हाथ में आ चुका है । विश्व व्यापार व पेटेंट क़ानूनों में ऐसे बदलाव इन कंपनियों व विकसित देशों के दबाव में करवाये गये हैं कि जिससे निरंतर इनका नियंत्रण बढ़ता जा रहा है और वे सरकारी नीतियों को प्रभावित कर अपना प्रसार और तेज़ी से कर रही हैं । इसके लिए भ्रष्टाचारी तौर-तरीक़ों के उपयोग के कई मामले सामने आ चुके हैं । जहां एक ओर इस बढ़ते नियंत्रण से इन कंपनियों ने बीज, कीटनाशक जंतुनाशक दवाओं, रायासनिक खाद, कृषि मशीनरी, कृषि उपज की बिक्री व ठेके की खेती पर आधारित अपनी आय बढ़ायी है, वहां किसानों को बढ़ते ख़र्च, क़र्ज़ व उजड़ते पर्यावरण की सौग़ात मिली है । आगे की कहानी और भी ख़तरनाक हो सकती है क्योंकि अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अंतिम लक्ष्य जीएम तकनीक के माध्यम से विश्व खाद्य व्यवस्था को नियंत्रित करना है ।

यह सब जानते-समझते हुए राजस्थान सरकार ने मोनसेंटो से कृषि क्षेत्र में बहुपक्षीय सहयोग का समझौता किया व इसी तर्ज़ पर पांच-छह अन्य कंपनियों से भी समझौते किये जिनमें अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनी व देश की अन्य बड़ी कंपनियां भी हैं । उनमें एक पायनीयर कंपनी है जो दुपांट बहुराष्ट्रीय कंपनी से जुड़ी रही है । इन समझौतों के ज़रिये राजस्थान की अधिकांश खाद्य, चारा व व्यापारिक फ़सलों के बीज उत्पादन, वितरण, अनुसंधान, जानकारी के प्रसार, फ़सल की कटाई की तकनीक आदि क्षेत्रों में इन बड़ी कंपनियों को अति महत्वपूर्ण स्थान मिल सकता है । इनमें से अधिकांश कंपनियां बायोटेक्नोलॉजी की अग्रणी पंक्ति में हैं । यह विज्ञान का वही क्षेत्र है जो अन्य कार्यों के अतिरिक्त जीएम कंपनियों के प्रसार से भी जुड़ा है । इस समय तो बी॰टी॰ कॉटन के अतिरिक्त अन्य जीएम फ़सलों को भारत में स्वीकृति नहीं मिली है पर स्वीकृति दिलाने के बहुत ताक़तवर उच्च स्तरीय प्रयास चल रहे हैं । बहुत ऊपर तक के तंत्र को इसके लिए प्रभावित किया जा रहा है । यदि इन तिकड़मों से अन्य जीएम फ़सलों को स्वीकृति मिल गयी तो जिस तरह का जाल राजस्थान सरकार के इन समझौते ने फैलाया है, उससे जीएम फ़सलों को कई राज्यों में बहुत तेज़ी से फैलाने में मदद मिलेगी ।

अत: इन समझौतों में जो लिखा गया है, उसके साथ हमें बहुराष्ट्रीय कंपनियां के खाद्य व कृषि व्यवस्था को नियंत्रित करने व इसके लिए जीएम तकनीक का उपयोग करने के प्रयासों को ध्यान में रखना पड़ेगा । तभी इन कंपनियों की भविष्य के लिए पूरी तैयारी समझ में आ सकेगी । इन समझौतों से ऐसी तैयारी की जाएगी जिससे जैसे ही जीएम फ़सलों की मंजूरी मिले वैसे ही इन्हें बड़ी तेज़ी से फैलाया जा सके । इसके अतिरिक्त जीएम फ़सलों संबंधी प्रयोग करने की अधिक सुविधाएं भी इस तरह के समझौतों से प्राप्त हो सकती हैं क्योंकि सरकार व कृषि विश्व-विद्यालयों व अनुसंधान संस्थानों का पूरा कृषि अनुसंधान तंत्र भी इन कंपनियों के खुले खिलवाड़ का स्थान इन समझौतों के कारण बन जाएगा । यह ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है कि जीएम फ़सलों का थोड़ा-बहुत प्रसार व परीक्षण भी बहुत घातक हो सकता है । मूल मुद्दा यह है कि इनसे जो सामान्य फ़सलें हैं वे भी प्रदूषित हो सकती हैं । यह जेनेटिक प्रदूषण बहुत तेज़ी से फैल सकता है व इस कारण जो क्षति

# अनाथ लड़कियों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN GIRLS

## मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

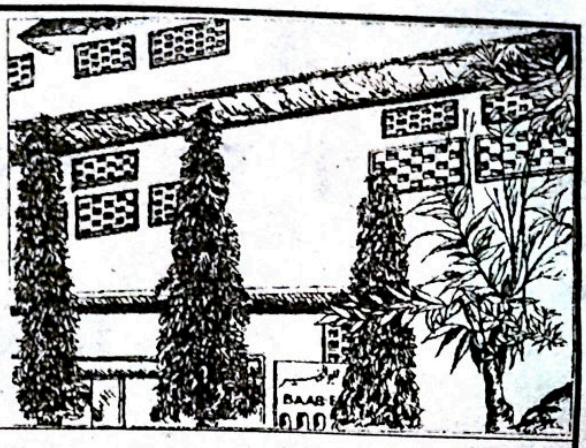

### संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2010 ई॰ तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है-आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**विदेशी चन्दा देने वाले :** भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

**विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"**

**.....पता.....**

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

**इक़बाल अहमद ख़ां**

होगी उसकी भरपाई नहीं हो सकती है । विश्व व राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त समस्त जानकारी यही बताती है कि बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियों व उनके सहयोगियों पर सरकार को बहुत निगरानी रखने की ज़रूरत है, वहां इन समझौतों को लागू किया गया तो सरकारी कृषि अधिकारी व इन कंपनियों के अधिकारी बार-बार एक ही मंच पर, एक साथ काम करते हुए नज़र आएंगे व उनमें भेद करना कठिन हो जाएगा । सरकारी तंत्र को प्रभावित करने का इन कंपनियों को भरपूर अवसर मिलेगा ।

राजस्थान सरकार ने मोनसेंटो कंपनी सहित देश की अन्य छह कंपनियों के साथ जुलाई 2010 में अलग-अलग सात समझौते किये । जिनमें मक्का, कपास, गेहूं, जौ, गर्म मसाला, फूल गोभी, पत्ता गोभी, खीरा, तरबूज़, टमाटर सहित अन्य सब्ज़ियों के बीजों के उत्पादन वितरण व शोध के लिए इन कंपनियों को कुछ महत्वपूर्ण सुविधाएं देने का प्रावधान किया है । इन समझौतों के ज़रिये राजस्थान की अधिकांश खाद्य, चारा व व्यापारिक फ़सलों के बीज उत्पादन, वितरण, अनुसंधान, जानकारी के प्रसार, फ़सल की कटाई की तकनीक आदि क्षेत्रों में इन बड़ी कंपनियों को अति महत्वपूर्ण स्थान मिल सकता है । ख़ास बात यह है कि राज्य के कृषि विभाग ने गुपचुप इस समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये हैं । यहां तक कि राज्य के कृषि मंत्री हरजीराम बुरडक ने भी इस समझौते के बारे में अनभिज्ञता प्रदर्शित की है । इन समझौतों या पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के लिए राज्य सरकार ने एक पत्र जून 2010 में विभिन्न कंपनियों को भेजा । उसके एक महीने बाद ही पहला समझौता हो गया । इसके बाद ताबड़तोड़ अनेक समझौते कर लिए गये ।

मोनसेंटो के साथ समझौते के पक्ष में यह कहा जाता है कि राजस्थान में उन्नत क़िस्म के बीजों की कमी है । यह सच है लेकिन मोनसेंटो जो बीज राजस्थान में सप्लाई कर रही है वह बीज आंध्र प्रदेश में तैयार किया जाता है जबकि राजस्थान में इन बीजों का लगातार दो वर्ष तक परीक्षण किया जाना चाहिए । राजस्थान जैसे राज्य की ज़मीन में हाइब्रिड मक्का, कपास, सब्ज़ियां पैदा करना आसान नहीं है । राजस्थान में ऐसी कई एजेंसी नहीं है जो इन बीजों की गुणवत्ता की जांच कर सके । अनेक वैज्ञानिकों की राय के विपरीत राजस्थान सरकार ने यह आत्मघाती समझौता किया है । करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले यह समझौते राज्य सरकार ने चुटकियों में कर डाले । दरअस्ल, इस समझौते से राज्य की कृषि काफ़ी प्रभावित हो रही है । मोनसेंटो के बीजों के माध्यम से एक फ़सल ही हो सकती है । फ़सल के बाद इससे अगली फ़सल के लिए बीज नहीं मिल पाता । इस तरह बीज के लिए किसान इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों का मोहताज हो जाएगा । इन बीजों के


HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Imlipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G.)

साथ कीटनाशक और अन्य रसायनों का प्रयोग भूमि की उर्वरता का विनाश करेगा और भू-जलस्तर पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा । सच्चाई तो यह है कि मोनसेंटो भारत में बीजों पर एकाधिकार क़ायम करना चाहता है । उसका सपना है कि ज्यों-ज्यों उसके बीजों का चयन बढ़ेगा, त्यों-त्यों कारपोरेट खेती का युग आता जाएगा ।

मोनसेंटो के समझौते में यह भी स्पष्ट कहा गया है कि दोनों पक्ष इसे गुप्त रखेंगे व एक पक्ष दूसरे पक्ष की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य व्यक्ति या संगठन को इसकी जानकारी नहीं देगा । इसका अर्थ तो यह हुआ है कि करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले समझौतों के बारे में यदि राजस्थान सरकार को अपने नागरिकों, किसानों व पंचायतों को जानकारी देनी हो तो उसे पहले मोनसेंटो से लिखित अनुमति लेनी होगी । न केवल इन समझौतों को गुप्त रखने का प्रयास किया गया, अपितु इन समझौतों को करने में बहुत जल्दबाज़ी भी बरती गयी । एक ओर तो राजस्थान सरकार पारदर्शिता व पंचायतराज के सशक्तीकरण का दम भरती है व पंचायतों के सशक्तीकरण की बात करती है दूसरी ओर वह राज्य के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र कृषि में इतने ख़तरनाक समझौते गुप्त ढंग से जल्दबाज़ी में पंचायतों से अनुमति प्राप्त किये बिना करती है । तो इस स्थिति में पारदर्शिता, पंचायत राज सशक्तीकरण, ग्रामीण विकेन्द्रीकरण के दावे तो अर्थहीन हो जाते हैं ।

सरकारी अधिकारी कहते हैं कि उनके पास अनुसंधान के लिए धन की कमी है अत: वे इन कंपनियों का सहयोग लेना चाहते हैं पर इन समझौते से स्पष्ट है कि यह कंपनियां सरकार से तरह-तरह का आर्थिक लाभ लेना चाहती हैं । तो फिर सरकार यह आर्थिक लाभ कंपनियों को न देकर सीधे अपने किसानों को सहायता क्यों नहीं दे देती है ।

**समझौते को रद्द कर किसानों की सीधी सहायता की जाए**

इन समझौतों में थोड़े बहुत बदलाव से कुछ हासिल नहीं होगा । ज़रूरत है कि इन्हें पूरी तरह रद्द कर सरकारी तंत्र सीधे किसानों की सहायता करे । यह सहायता इस तरह की होनी चाहिए कि किसान कम से कम ख़र्च कर स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग कर अच्छी उत्पादकता व फ़सल की गुणवत्ता प्राप्त कर सकें । चरागाह, हरियाली को बचाना व जल संरक्षण बहुत ज़रूरी है । छोटी सिंचाई, कंपोस्ट की खाद व परंपरागत बीजों पर आधारित खेती में ख़र्च कम होगा व स्वास्थ्य के लिए बेहतर खाद्य उपलब्ध होगा । स्वास्थ्य के लिए उत्तम फ़सल कर सरकार को समर्थन मूल्य बहुत अच्छा देना चाहिए व खेती किसानी की सहायता के लिए अपने बजट में बहुत वृद्धि करनी चाहिए क्योंकि अब किसान जलवायु बदलाव का संकट भी झेल रहे हैं । संक्षेप में कहें तो किसानों व विशेषकर छोटे किसानों की रक्षा व खेती किसानी के अनुकूल पर्यावरण की रक्षा को सरकार को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए ।

(वि॰फ़ी॰)


एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

| | |
|---|---|
| सिवनी से मंडला | प्रात: 7:20 |
| सिवनी से छिंदवाड़ा | प्रात: 7:55 |
| छिंदवाड़ा से बालाघाट | प्रात:10:30 |
| मंडला से सिवनी | दिन 12:50 |
| बालाघाट से सिवनी | सायं 6:00 |
| सिवनी से नैनपुर | सायं 5:40 |
| नैनपुर से सिवनी | दिन 12:20 |




नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

# INFORMATION BROCHURE



- Almanar Social Service a registered society. Bridging the gap between giving and receiving ends.

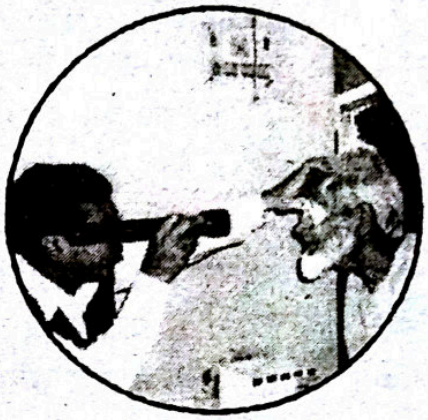

- Working in the field of education, health and employment generation.
- A unique charitable institution in Jharkhand.



- Projects in progress : Model primary school, Health

## المنار سوشل سروس

## Almanar Social Service

(An NGO registered societies Act XXI of 1860

President
Abul Arif
(M.Sc.)

Office : Jharna Road, Near Eidgaah Azadnagar,
Jamshedpur-832110
Tel. : +91-657-6542806, +91-9279149654

Secretary
Haider Imam
(B.com. PG Dip)

Our Bank A/c No. 29601010007675
CANARA BANK
Kabir Memorial School, Zakir Nagar, Mango, Jamshedpur (Jharkhand)

# चौपाये भी उड़ते हैं

ज़रा सोचिए, आप किसी गाय, भैंस, हाथी या घोड़े को उड़ते हुए देखेंगे, तो कैसा लगेगा, डरिये नहीं, गाय और हाथी तो नहीं, लेकिन कुछ चौपाये ज़रूर उड़ते हैं। ये ज़मीन पर भी चलते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उड़ भी सकते हैं।

उड़ने वाले गिरगिट एशिया के उष्ण कटिबंध प्रदेशों में पाये जाते हैं। इनके शरीर का रंग मटमैला होता है और उससे एक विशेष प्रकार की चमक निकलती है। आपने सर्प के फन को देखा होगा, जब तक वह उसे फैलाता नहीं तब तक उसका आकार बहुत छोटा रहता है और कम चौड़ा होता है। इसी तरह ये गिरगिट अपने शरीर के दोनों ओर सर्प की तरह चमड़ी रखता है। जब वह उड़ना चाहता है तो चमगादड़ के पंखों की तरह उसके पंख फैल जाते हैं और वह उड़ने लगता है। ऐसा लगता है जैसे छतरी में हवा उड़ी जा रही है।

आपको मेढ़कों की उड़ने की बात केवल कल्पना लगेगी लेकिन वास्तव में कुछ ऐसे मेढ़क होते हैं जो उड़ भी सकते हैं। इन मेढ़कों के पैरों की बनावट बड़ी विचित्र होती है। इनके पंजे चौड़े हो जाते हैं और ये उड़ने लगते हैं।

इनके शिकार करने का ढंग भी बड़ा अद्‌भुत है। इनकी उंगलियों तथा अंगूठे के छोरों पर एक प्याली होती है। उस प्याली में एक प्रकार का चिपचिपा द्रव्य भरा रहता है। इन प्यालियों की सहायता से ये अपने शत्रुओं को भी भगाते हैं। बड़े से बड़ा विषधर भी इनका मुक़ाबला नहीं कर सकता है। जैसे ही वह उन पर झपटता है ये तुरंत ही अपना द्रव्य उन पर छिड़क देते हैं जिससे वह अंधा हो जाता है। ●सरला जैन

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित।
फ़ोन: 011-26949430
**संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद**

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

With best compliments from:

Ph: 0651-2330144, 2330604
Mo. 09334706965

Azad Pharma
formerly
Azad Pharmacy

Timing :
10:00 a.m. to 09:00 p.m.

Sunday
Closed

B-7, Sainik Market Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

# इस्लामिया अरबिक कॉलेज

# ISLAMIA ARABIC COLLEGE

**(Residential School, रेजिडेंशियल स्कूल)**

**मंसूर एजूकेशनल एंड वेलफेयर ट्रस्ट के अन्तर्गत**

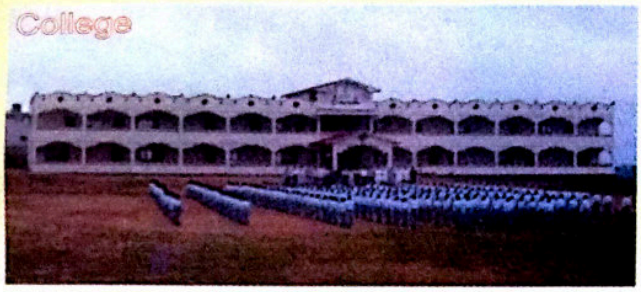


## दीनी और आधुनिक शिक्षा का सुन्दर संगम

इस्लामिया अरबिक कॉलेज, दक्षिण भारत का अनोखा रेजिडेंशियल स्कूल है, जहां देश के विभिन्न राज्यों के छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षा (पांचवीं से दसवीं कक्षा तक) के साथ-साथ दीनी शिक्षा में सानविया (मौलवी) तक की शिक्षा दी जाती है।

## शिक्षा का उद्देश्य

- छात्रों को किताब व सुन्नत की तालीम देना।
- आधुनिक शिक्षा देना • मोमिनाना बसीरत पैदा करना।
- इक़ामते दीन के फ़रीज़े के लिए तैयार करना।
- अल्लाह का मुख़लिस बन्दा और देश का एक अच्छा नागरिक बनाना।




## उपलब्ध सुविधाएं

विस्तृत कैम्पस, सुखद और शांत वातावरण में उच्च स्तरीय शिक्षा प्रशिक्षण, हॉस्टल, मस्जिद, लाइब्रेरी, कंप्यूटर लैब, कराटे की शिक्षा, खेल-कूद के लिए बड़ा मैदान, दावती काम के लिए लिखत व मौखिक अभ्यास, सभी विभागों के लिए योग्य, अनुभवी और मेहनती शिक्षक।

## दाख़िले की शर्तें

- छात्र की उम्र 11 वर्ष से अधिक न हो।
- पांचवीं कक्षा पास हो।
- नाज़रा क़ुरआन मजीद पढ़ सकता हो।
- हमारी प्रवेश परीक्षा में सफल हो।




**एक जून से शिक्षा वर्ष का आरंभ होता है**
**प्रवेश परीक्षाएं मई के महीने में होती है।**

**रजिस्ट्रेशन और अन्य जानकारियों के लिए संपर्क करें :**

**ताहिर हुसैन (सेक्रेट्री)**
**09445475006**

**मनव्वर पाशा**
**09986846146**

**एडमीशन टेस्ट इन स्थानों पर होगा–**
**•सिंधनूर 7 मई 2011 •गुलबर्गा 8 मई 2011 •मंसूरा 15 मई 2011**

Islamia Arabic College,Mansoora, Post ALUR.573213,Dist:Hassan,Karnataka
Ph:08170-218320,9341995959,E.mail:secmansoora@rediffmail.com
Website:www.iacmansoora.com

Posted on 20-21 May 2011
June 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.05.2011

हिन्दी महिलाओं की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

Software Facilities
Office
Homes
Apartments
Sites
Property Management
Facilities
Hospitality

SILVERLINE®
TOTAL REALTY SOLUTIONS SINCE 1947

INTERNATIONAL PROPERTY AWARDS
CNBC
2008
The World
★★★★★
BEST INTERNATIONAL PROPERTY-FINDER

What are you looking for?

ICREA FIABCI REALTOR NAR INDIA BRAI INDIA RICS

201, Barton Centre, 84 M.G.Road,
Bangalore - 560 001. Tel: 40828888 / 25592881

www.silverlinerealty.com

61 years in Real Estate